Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

**अर्हत उवाच**

सव्वमेयं णिराकिच्चा,
ते ठिया सुसमाहिए।

**जो अनुकूल परिषहों को निरस्त कर देते हैं वे समाधि में स्थित हो जाते हैं।**

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 1 • 10 - 16 अक्टूबर, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 08-10-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

## जैन विश्व भारती के ५१वें वार्षिक अधिवेशन का शुभारंभ

# तेरापंथ समाज की उपयोगी एवं आश्रयदायिनी संस्था है जैन विश्व भारती : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २६ सितंबर, २०२२

जैन विश्व भारती के ५१वें वार्षिक अधिवेशन में पावन पाथेय प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि आज जैन विश्व भारती का अधिवेशन होने वाला है। जैविभा तेरापंथ समाज की एक महत्त्वपूर्ण उपयोगी एवं आश्रयदायिनी संस्था है। गुरुदेव तुलसी के शासनकाल में इसका जन्म हुआ था। इसे कामधेनू व जय कुंजर भी कहा गया है।

जैविभा में समण श्रेणी का मुख्यालय है। समण श्रेणी का विकास हो, योग्यता का विकास हो। इससे जुड़ी हुई पारमार्थिक शिक्षण संस्था भी है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था का भी अधिवेशन हो। मर्यादा महोत्सव के पूर्व दिनों में किया जा सकता है। मुमुक्षुओं का भी विशेष विकास हो। तत्त्वज्ञान का विशेष विकास हो। समणियों के मूल में मुमुक्षु बहनें हैं। समणियाँ भी ट्रेंड हों। नवदीक्षित साधु-साध्वी या समणी कुछ समय केंद्र में रहें तो अच्छा शिक्षण प्रदान किया जा सकता है।

आचार्यश्री ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत पर्यावरण विशुद्धि दिवस के अवसर पर प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि पर्यावरण की शुद्धि आवश्यक है। हमारे आसपास पानी, मिट्टी, वनस्पति, आकाश, वायु है। इस धरती पर तीन रत्न बताए गए हैं–जल, अन्न और सुभाषित (अच्छी वाणी)। पानी न हो तो जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। आदमी बिना घर और कपड़े के रह सकता है, लेकिन बिना भोजन के वह कैसे रह सकता है? इसलिए अन्न भी एक रत्न है। अच्छी वाणी अर्थात् सुभाषित को भी एक रत्न कहा गया है। आदमी

अपने जीवन में जल का अपव्यय न करे। वृक्षों को अनावश्यक नहीं काटना चाहिए। विद्युत का अनावश्यक उपयोग न हो। अहिंसा और संयम की दृष्टि से भी इन रत्नों के संरक्षण

का प्रयास होना चाहिए। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने उपस्थित विद्यार्थियों को विशेष परिस्थिति के सिवाय वृक्षों का उन्मूलन न करने, आजीवन आत्महत्या नहीं करने और द्वेषवश

किसी की हत्या नहीं करने का भी संकल्प भी कराया।

मुख्य प्रवचन में आचार्यप्रवर ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जो केवलज्ञानी होते हैं, वे अतीन्द्रिय ज्ञान-केवलज्ञान संपन्न होते हैं। जो

भावेन्द्रिय हैं, वो क्षायोपशमिक भावजन्य होती है। क्योंकि केवली तो क्षायिक भाव संपन्न हो गए हैं, क्षयोपशम भाव से ऊपर उठ गए हैं। इसलिए कुछ

जानने-देखने के लिए उनको इंद्रियों का उपयोग करने की अपेक्षा ही नहीं रहती।

केवली को द्रव्योन्द्रियों की अपेक्षा सइंद्रिय कहा जा सकता है। द्रवेंद्रियाँ जो पौद्गलिक हैं, उस अपेक्षा से वे पंचेन्द्रिय होते हैं। भावेन्द्रियों की अपेक्षा से तो वे अनिन्द्रिय हो जाते हैं। केवली मित और अमित दोनों को जानता है। सब कालों-भावों को वो जानते हैं। छद्मस्थ आदमी इंद्रियों का उपयोग करता है। हम इंद्रियों के उपयोग में सावधानी रखें। हमारे पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और पाँच कर्मेंद्रियाँ होती हैं। हम

इंद्रियों का सदुपयोग करें। गांधीजी के तीन बंदर–बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और बुरा मत कहो। चौथी बात है कि बुरा सोचें भी नहीं। हम इंद्रियों का संयम रखें। विद्यार्थियों को भी इंद्रियों का अच्छा उपयोग करना चाहिए। विद्यार्थी का सिर्फ अंक प्राप्त करने का लक्ष्य न हो। ज्ञान अच्छा बढ़े।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि वि०सं० २००५ का छापर का चातुर्मास पूज्य गुरुदेव तुलसी के लिए उपलब्धि भरा चातुर्मास था। वर्तमान में भी छापर चातुर्मास में भी आचार्यप्रवर अनेक कार्य कर रहे हैं। गुरुदेव तुलसी ने समण श्रेणी को जैविभा की अनेक गतिविधियों से जोड़ा था। समणी जी ने भी विदेशों में अपनी साख बनाई है। समण श्रेणी विकास का माध्यम है।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि साधक गुरु प्रसाद की ओर अभिमुख रहे। जैन विश्व भारती कामधेनू है। समण श्रेणी समय की माँग है, यह सब गुरु का ही प्रसाद है। जैविभा में ध्यान साधना अच्छी हो सकती है। जैविभा में अनेक आयाम चलते हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि गुरु दूरदृष्टा होते हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में एक से बढ़कर एक दूरदृष्टा होते हैं। आचार्य के चिंतन में रहस्य छिपे होते हैं, वे वर्तमान के साथ भविष्य भी देखते हैं। हम वर्तमान आचार्य की शासना में विकास कर रहे हैं।

जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्ति कुमार जी ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। समणी निर्देशिका समणी अमलप्रज्ञा जी, समणीवृंद द्वारा समूह गीत की भी प्रस्तुति हुई। जैविभा के अध्यक्ष मनोज लुणिया ने पूज्यप्रवर को प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं अपनी भावना अभिव्यक्त की। अणुव्रत समिति, छापर के अध्यक्ष प्रदीप सुराणा एवं माला कातरेला ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## अधर्म युक्त जीवन लौहार की धोंकणी के समान : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २७ सितंबर, २०२२

आध्यात्मिक शक्तिप्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि क्या केवली साधु प्रणीत मन और वचन को धारण करता है, उनका प्रयोग करता है? उत्तर दिया गया कि हाँ धारण और प्रयोग करता है। केवलज्ञानी के क्षयोपशम भाव नहीं होता है। औदायिक भाव तो रहता है।

औपक्षयिक भाव केवल मोहनीय कर्म से संबंधित है और वह ग्यारहवें गुणस्थान तक होता है। केवली के क्षायिक भाव होता है। क्षयोपशम भाव केवल घाति कर्म के साथ ही होता है। केवली को नो संज्ञी-नो असंज्ञी कहते हैं। प्रणीत मन प्रकृष्ट शुभ मन है, भाव मन वाला मन नहीं है। यह एक द्रव्य मन है।

औपक्षयिक भाव केवल मोहनीय कर्म से संबंधित है और वह ग्यारहवें गुणस्थान तक होता है। केवली के क्षायिक भाव होता है। क्षयोपशम भाव केवल घाति कर्म के साथ ही होता है। केवली को नो संज्ञी-नो असंज्ञी कहते हैं। प्रणीत मन प्रकृष्ट शुभ मन है, भाव मन वाला मन नहीं है। यह एक द्रव्य मन है।

प्रणीत मन के आधार पर ही देवता प्रश्न का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ प्रश्न किया गया कि केवली के प्रणीत मन-वचन को वैमानिक देव देखते हैं क्या? उत्तर दिया गया कि कई देवता जानते-देखते हैं, कई नहीं जानते-देखते भी हैं। उपयोग लगाए तो देख-जान सकते हैं। योग्य और उपयुक्त होते हैं, तो ग्रहण कर सकते हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)

## जीवन के कल्याण के लिए अणुव्रत के नियम स्वीकार करें : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २८ सितंबर, २०२२

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत तीसरे दिन आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अणुव्रत प्रेरणा दिवस का समायोजन हुआ। इस संदर्भ में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उपस्थित जनता को मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ किया। साधु का जीवन तो पंच महाव्रतों से भावित होता है, किंतु आम आदमी तो महाव्रती नहीं बन सकता है, इसलिए वह अपने जीवन के कल्याण के लिए अणुव्रतों का स्वीकरण करे।

अणुव्रतों के छोटे-छोटे नियमों को स्वीकार करे तो वह अपने वर्तमान जीवन के कल्याण के साथ आगे के जीवन को भी अच्छा बना सकता है। अणुव्रत के नियमों को स्वीकार करने के लिए किसी का जैनी बनना आवश्यक नहीं है और यहाँ तक कि आस्तिक होना भी अपेक्षित नहीं है। जैसे किसी निरपराध की हत्या नहीं करना, प्रमाणिक बनना, अनैतिकता का त्याग कर नैतिक बनना आदि-आदि अनेक छोटे-छोटे नियमों का स्वीकरण कर आदमी अपने वर्तमान जीवन के साथ-साथ अपने परलोक भी अच्छा बना सकता है। इन नियमों को जीवन में जितना संयम आता है, जीवन भी अच्छा बनता चला जा सकता है। मुख्य प्रवचन में महामनीषी ने आगम आधारित प्रवचन में फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि भंते! क्या अनुत्तरोपपातिक देव अपने विमान में रहते हुए मनुष्य लोक में स्थित केवली के साथ आलाप अथवा संलाप करने में समर्थ है? उत्तर दिया गया हाँ समर्थ है।

चार प्रकार के देव निकाय होते हैं। भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 - 16 अक्टूबर, 2022



✦ *शिक्षा जगत में नैतिकता की बात, भावात्मक परिष्कार या इमोशनल डेवलपमेंट की बात–ये सब अणुव्रत से ही जुड़े हुए तत्त्व हैं। अणुव्रत व्यक्ति सुधार और समाज सुधार–दोनों दृष्टियों से उपयोगी है।*
**–आचार्यश्री महाश्रमण**

# कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के बिना लोकतंत्र का देवता विनाश को प्राप्त हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १ अक्टूबर, २०२२

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत आज छठा दिवस अनुशासन दिवस है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने इस अवसर पर फरमाया कि अनुशासन बहुत अपेक्षित और उपयोगी होता है। अनुशासन करने वाला कौन है, उसका तरीका कैसा है और किस पर अनुशासन किया जा रहा है, यह अनुशासन को उपयोगी बना सकता है। अनुशासनहीनता समाज-संगठन के लिए कठिनाई पैदा कर सकती है। राजतंत्र हो या लोकतंत्र अनुशासन आवश्यक है।

कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के बिना लोकतंत्र का देवता मृत्यु और विनाश को प्राप्त हो सकता है। अनुशासन से समाज स्वस्थ रह सकता है। परिवार में भी अनुशासन चाहिए। उद्दंड के लिए दंड संहिता होती है। वर्तमान में लोकतंत्र में न्यायपालिका का कार्य अनुशासन स्थापित करना ही है। निज पर शासन, फिर अनुशासन। हम सभी अनुशासन में रहने की अनुभावना रखें।

मुख्य प्रवचन में मंगल देशना प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि भगवती सूत्र में कहा गया है कि चतुर्दशपूर्व एक विशिष्ट ज्ञान राशि होती है। चौदह पूर्वों को धारण करने वाला श्रुत ज्ञान से बहुत बड़ा ज्ञानी साधु हो सकता है। बताया गया कि चतुर्दशपूर्व धारी उत्कारिका भेद से विद्यमान अनंत द्रव्य लब्ध-प्राप्य होता है, उत्कारिका भेद से वह ऐसा दिखा सकता है। भगवती सूत्र में कितनी बातें प्राप्य होती हैं। यह जादूगरी का एक स्त्रोत है। यह अज्ञानी के लिए तो चमत्कार है पर ज्ञानी के लिए नियम है।

हमारे यहाँ नियम है कि एक आकाश प्रदेश में अनंत प्रदेशी पुद्गल स्कंध उसमें समाविष्ट हो जाते हैं। यह परिणति की स्थिरता है। मोक्ष में जाने वाली आत्मा एक समय में अस्पर्शी हो मोक्ष में चली जाती है। यह जादू जैसी स्थिति है कि चतुर्दशपूर्वी एक चीज को हजार चीज बनाकर दिखा सकता है। हालाँकि इसमें भी ज्ञान और विद्या की अपेक्षा रहती है। ज्ञान से तरीका पकड़ में आ गया तो आदमी ऐसा कर सकता है।

दुनिया में अनेक विद्याएँ हैं, पर उनमें कोई-कोई ही निष्णात हो सकता है। चतुर्दशपूर्वी विशिष्ट ज्ञानी होती है। भद्रबाहु स्वामी श्रुत केवली थे। उन्होंने महाप्राण की साधना की थी। ज्ञान देने का भी प्रयास किया था। ज्ञान देने वाला चाहिए तो ज्ञान लेने वाला भी योग्य होना चाहिए। योग्य व्यक्ति को ही ज्ञान देना चाहिए। आदमी विद्या का दुरुपयोग न करे।

प्राचीन काल में तो अनेक विद्याएँ होती थीं। पर वर्तमान में तो कुछ ही विद्याएँ विद्यमान हैं। कई नई विद्याएँ वर्तमान में और विकसित हुई हैं। पर साथ में कर्मवाद भी काम करता है।

प्राचीन शास्त्रों में विद्याओं के स्रोत-बीज मिल सकते हैं और विद्याओं का विकास हो सकता है। हम विद्याओं का सदुपयोग करें।

पूज्यप्रवर ने मंगल देशना प्रदान करने से पूर्व आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के नव निर्वाचित अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़ ने आचार्यप्रवर के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति करते हुए नई टीम की घोषणा की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)
ताल छापर, २८ सितंबर, २०२२

आलाप-संलाप कर लेते हैं।

जो विद्वान हैं, उनको उपयुक्तता के अनुसार प्रश्न पूछने वाले को उत्तर देना चाहिए, इससे ज्ञान की वृद्धि होती है। मोबाइल से तो भाषा के पुद्गल माध्यम से जाते हैं, पर केवली तो पुद्गलों को जानकर प्रश्नोत्तर कर लेते हैं। हमारे प्राच्य साहित्य में अनेक सूक्ष्म बीज हैं, उनके आधार पर नया-नया आविष्कार होता रहता है।

प्रश्न है, अनुत्तरोपपातिक देव होते हैं, वे उदीरण मोह वाले होते हैं या उपशांत मोह वाले हैं या क्षीण मोह वाले हैं? उत्तर दिया गया वे उदीरण मोह वाले नहीं हैं, उपशांत मोह वाले हैं, क्षीण मोह वाले भी नहीं हैं। ये देवता साधु तो नहीं होते हैं, पर कुछ अंशों में साधु से कम नहीं होते हैं। सब शांत स्वभाव वाले होते हैं। ये उपशांत मोह ग्यारहवें गुणस्थान वाला नहीं है। उत्कट रूप में उतना नहीं होता है।

## कालूगणी जन्म दिवस

अष्टम् आचार्य कालूगणी के १३५वें दीक्षा दिवस के संदर्भ में फरमाया कि हमारा सौभाग्य है कि हम अभी हमारे गुरुओं के गुरु की जन्मभूमि पर चतुर्मास कर रहे हैं।

आज कालूगणी का दीक्षा दिवस है। चातुर्मास में उनका आचार्य पदारोहण दिवस व महाप्रयाण दिवस भी आ गया। वे हमें अष्टामाचार्य के रूप में प्राप्त हुए। हम उनके जीवन से प्रेरणा लेते रहें,

आदमी के जीवन में शांति रहे, मोह उपशांत रहे। ज्ञान वृद्धिंगत और पुष्ट हो जाए तो बहुत बड़ी लब्धि है। केवलज्ञानी के तो मोह पूर्णतया क्षीण होता है। उपशम श्रेणी आदमी लेता है, तो वापस नीचे आना पड़ेगा। हमें तो कभी उपशम श्रेणी की बजाय क्षपक श्रेणी मिले। आगे बढ़ते रहें। उपशम श्रेणी बंद गली का रास्ता है। क्षपक श्रेणी तो राजमार्ग है। लक्ष्य तक पहुँचाने वाला है।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत आज अणुव्रत प्रेरणा दिवस है। अणुव्रत अनुशास्ता ने फरमाया कि आदमी के जीवन में व्रत आए। गृहस्थों के लिए ही अणुव्रत है। छोटे-छोटे व्रतों को ग्रहण करें। अणुव्रत आंदोलन के नियम तो जैन-अजैन सभी के लिए हैं। नास्तिक भी इसे स्वीकार कर सकते हैं। अणुव्रती बनें। जीवन अच्छा बने। जीवन में संयम आए तो आगे दुर्गति से भी बचा जा सकता है।

साधना-सेवा करते रहें। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

सरोज भंसाली, प्रिया दुधेड़िया, हर्षिल बरड़िया ने गीत एवं कविता से अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि समस्या तब तक समस्या बनी रहती है, जब तक उसे समाधान नहीं मिल जाता। उवसग्गहर स्तोत्र समस्या का समाधान बन सकता है।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)
ताल छापर, २७ सितंबर, २०२२

वैमानिक में बहुत सबसे उच्च कोटि के देव अनुत्तरोपपातिक देव होते हैं। वे बहुत ज्यादा दूर हैं। वे तीर्थंकर या केवली के पास यों आते नहीं हैं। उनके में कोई जिज्ञासा हो तो वे वहाँ बैठे ही केवलज्ञानी से सीधा संपर्क कर अपना प्रश्न का उत्तर पूछते हैं। केवलज्ञानी उनके मनोभावों को जानकर प्रश्न का उत्तर दे देते हैं। दूर से ही मनुष्य के भी उपयोग लगा रहता है, तो ग्रहण कर सकता है। चित्त की एकाग्रता एक विशेष चीज होती है। अनुपयुक्त और उपयुक्त यह एक दिशा-निर्देशक तत्त्व बन सकता है। प्रेक्षाध्यान पद्धति में एक शब्द है–भाव क्रिया। यह इस भगवती सूत्र उपयुक्तता से जुड़ी है। भावक्रिया से ईर्या समिति अच्छी हो सकती है। श्रावक के भी सामायिक में उपयुक्तता रहे। सामायिक में निर्वद्य योग रहे। हमारी धार्मिकता में उपयुक्तता-दत्तचित्तता अच्छी रहे तो उसका अच्छा फल प्राप्त हो सकता है।

पूज्यप्रवर ने आध्यात्मिक अनुष्ठान का प्रयोग कराया। आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत जीवन-विज्ञान दिवस है। अणुव्रत अनुशास्ता पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हर प्राणी जीवन जी रहा है। जीवन जीना सामान्य बात है। जीवन का विज्ञान अगर किसी के पास है, वो एक विशेष बात हो जाती है। गृहस्थ के जीवन में अर्थ काम तो है, पर धर्म व मोक्ष की साधना है कि नहीं। अधर्म युक्त जीवन तो लौहार की धोंकणी की तरह है।

जीवन का विज्ञान यानी विशेष ज्ञान हो। जीवन में अहिंसा का प्रयोग करें। अध्यात्म के प्रयोग, महाप्राण ध्वनि, श्वास प्रेक्षा के प्रयोग जीवन में हों। विद्यार्थियों के लिए ये लिए ये विशेष उपयोगी हो सकता है। उनके जीवन में जीने की कला आ जाए। विद्यार्थी में अच्छे संस्कार आएँ। शारीरिक विकास, बौद्धिक विकास के साथ मानसिक और भावनात्मक विकास भी हो। इस संदर्भ में महाप्राण ध्वनि का प्रयोग बताया गया है। आचार्यप्रवर ने उपस्थित श्रद्धालुओं को महाप्राण ध्वनि का प्रयोग भर कराया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि दोहरे लक्ष्य की संपूर्ति एक साथ कैसे हो सकती है। लक्ष्य तक पहुँचने के लिए व्यक्ति लक्ष्य के विपरीत जाने वाले मार्गों को छोड़कर एक ही मार्ग पर चलने का प्रयास करे तो सफलता मिल सकती है। लक्ष्य के साथ निर्धारित करें कि शांति की राह पर चलना है या अलग राह पकड़नी है।

मुनि वर्धमान कुमार जी आज जीवन-विज्ञान सप्ताह पर प्रातः मरुधर स्कूल गए, वहाँ के कार्यक्रमों की जानकारी श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# अणुविभा में दीर्घा उद्घाटन व सम्मान समारोह

**राजसमंद।**

अणुव्रत का दर्शन वैश्विक समस्याओं का समाधान प्रदत्त करता है। यह भारतीय संत परंपरा की उज्ज्वल विरासत है कि उसने दुनिया को समय-समय पर सद्मार्ग दिखाया है। जब देश आजादी के जश्न के साथ-साथ विभाजन की विभीषिका के दौर से गुजर रहा था, ३४ वर्ष के युवा संत आचार्यश्री तुलसी भारत के भविष्य की नब्ज टटोल रहे थे। उन्होंने तब 'असली आजादी अपनाओ' का आह्वान किया और अणुव्रत दर्शन दुनिया के सामने रखा। अमेरिका की विश्व प्रसिद्ध टाइम मैगजीन ने अपने आर्टिकल में लिखा था कि छोटे कद का एक युवा संत अणुबम से मुकाबला करने के लिए अणुव्रत की बात कर रहा है। तब पूरी दुनिया का ध्यान आचार्य तुलसी और अणुव्रत की ओर आकर्षित हुआ था। ये विचार केंद्रीय संस्कृति एवं संसदीय कार्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने अणुव्रत विश्व भारती में आयोजित सम्मान समारोह में व्यक्त किए।

अर्जुनराम मेघवाल ने जी-२० समूह के अध्यक्षीय दायित्व भारत को मिलने को एक महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम बताया। उन्होंने कहा कि अणुव्रत और अणुविभा के प्रति मेरी विशेष रुचि है। अणुविभा का यह मुख्यालय बहुत ही मनभावना है। बच्चों के लिए प्रेरणा देता है। इसकी नींव में मोहनभाई का श्रम मुखरित हो रहा है। मैं चाहता हूँ कि अणुव्रत आंदोलन के ७५ वर्ष की संपूर्ति पर यह आंदोलन देश-विदेश में अधिक से अधिक फैले।

कार्यक्रम को सान्निध्य प्रदान करते हुए साध्वी मंजुयशा जी ने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती आज देश-विदेश में अणुव्रत आंदोलन का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था बन गई है। राजसमंद में अणुविभा का यह केंद्र बहुत ही रमणीय है। मोहनभाई के श्रम व त्याग को उनका पुत्र संचय जैन बहुत ही समर्पण भाव से आगे बढ़ा रहा है। आज जिन महानुभावों का सम्मान किया जा रहा है उनका अहम् योगदान संस्था के विकास में योगभूत बना है। आचार्य तुलसी के सपनों का समाज और विश्व बनाने के लिए प्रयासरत रहना हम सबका कर्तव्य है।

कार्यक्रम के पूर्व अणुविभा मुख्यालय चिल्ड्रन्स पीस पैलेस की विभिन्न दीर्घाओं के आधुनिकीकरण का लोकार्पण किया गया। अणुव्रत तुलसी दर्शन का उद्घाटन बैंगलोर प्रवासी सायर हीरालाल मालू, महावीर महात्मा महाप्रज्ञ अहिंसा दीर्घा को दिल्ली प्रवासी तेजकरण सुराणा, मोहनभाई अतिथि गृह के द्वितीय तल का मुंबई प्रवासी सुमतिचंद गोठी एवं 'हार्मनी' सीप एंड शॉप का उद्घाटन सूरत प्रवासी शांतिलाल सोलंकी ने किया। इस नवीनीकरण के माध्यम से इस केंद्र का आकर्षण और उपयोगिता दोनों में अभिवृद्धि हुई है। इस अवसर पर विधायक दीप्ति माहेश्वरी, नगर परिषद सभापति अशोक टॉक जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना, पुलिस अधीक्षक सुधीर चौधरी उपस्थित थे।

अणुविभा केंद्रीय टीम से प्रताप दुगड़, राजेश सुराणा, अशोक डूंगरवाल, कोषाध्यक्ष राकेश बरड़िया, संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, डॉ० राकेश तैंगल, प्रकाश तातेड़, मर्यादा कोठारी, डॉ० नीना कावड़िया, अभिषेक कोठारी, डॉ० सीमा कावड़िया, अणुविभा के न्यासी सुरेश कावड़िया, गणेश कच्छारा, अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ० सोहनलाल गांधी एवं निर्मल रांका, तेरापंथ विकास परिषद सदस्य पदमचंद पटावरी, अणुव्रत प्रवक्ता डॉ० महेंद्र कर्णावट, डॉ० बसंतीलाल बाबेल, डॉ० वीरेंद्र महात्मा आदि उपस्थित थे।

स्वागत भाषण में अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि राजसमंद की इस भूमि और इस संस्था की नींव को प्राप्त आचार्य तुलसी के चरण स्पर्श का प्रभाव है कि यह संपूर्ण अणुव्रत आंदोलन का मुख्यालय बन गया है। हमें इस बात का गौरव है कि हम इस संस्थान व आंदोलन को अणुव्रत के सिद्धांतों के अनुरूप पूर्ण शुचिता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। संस्थागत, कार्यकारी और आर्थिक शुचिता की दृष्टि से संस्था द्वारा उठाए गए कदमों से अणुव्रत के प्रति लोगों की आस्था और भी बढ़ गई है। जैन ने अणुविभा के विकास में योगभूत रहे, भामाशाहों का अभिनंदन करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी के आशीर्वाद से मोहनभाई ने जिस केंद्र की यहाँ स्थापना की, आज वो एक नए व निखरे स्वरूप में हमारे सामने है।

तेजकरण सुराणा, हीरालाल मालू, सुमतिचंद गोठी, देवेंद्र सोलंकी ने भी अपने विचार व्यक्त किए और इसे अपना सौभाग्य बताया कि इस संस्था के विकास में वे सहयोगी बन सके। डॉ० सोहनलाल गांधी, अविनाश नाहर ने अपने विचार व्यक्त किए।

अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने कार्यक्रम का संचालन किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया ने किया। कार्यक्रम का प्रारंभ सुभाष पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा अणुव्रत गीत से हुआ।

# उपासक श्रेणी बहुत उपयोगी

**पालनपुर।**

उपासक जवेरीलाल संकलेचा, खुबीलाल छत्रावत एवं श्रावक-श्राविका का पर्युषण पर्व आराधना हेतु अद्भुत उत्साह देखने को मिला। वास्तव में उपासक श्रेणी समाज के लिए एक अनुपम देन है। प्रतिक्रमण और प्रार्थना प्रवचन के समय भगवान महावीर के भव, साधना काल एवं खाद्य संयम दिवस, स्वाध्याय दिवस, सामायिक दिवस, वाणी संयम दिवस, अणुव्रत चेतना दिवस, जप दिवस, ध्यान दिवस, संवत्सरी महापर्व एवं क्षमापना दिवस पर विशेष संबोधन उपासक जवेरीलाल संकलेचा एवं खुबीलाल ने किया।

महिला मंडल एवं ज्ञानशाला की विशेष पच्चीस बोल का सरल विवेचन, बारह व्रत एवं जैन विद्या की तैयारी में सभी का उत्साह देखने लायक था। रात्रिकालीन प्रवचन एवं प्रतिक्रमण उपस्थिति सराहनीय रही।

रात्रिकालीन प्रवचन तनाव के कारण व निवारण, जीवन में सफलता का राज, कैसे करें सहनशीलता का विकास, क्रोध के कारण और निवारण, कैसे हो स्मरणशक्ति का विकास, बुढ़ापा वरदान कैसे बने, आदि विषयों पर प्रेक्षाध्यान व योग के आधार पर मार्मिक प्रवचन व प्रयोग, प्रवक्ता उपासक जवेरीलाल संकलेचा ने करवाया। पर्युषण पर्व में नवकार मंत्र का जप सुबह से शाम तक क्रम अनुसार रहा। मौन की पचरंगी, उपवास, अभिनव सामायिक, जैन विद्या परीक्षा में छः परीक्षार्थी तैयार हुए। उपासक ने सभी परिवार को जागरूक करने के लिए सभी घरों में जाकर विशेष प्रेरणा दी, जो हमारे लिए प्रेरणादायक रही। तेरापंथी सभा एवं महिला मंडल आदि का विशेष श्रम, सहयोग रहा।

पालनपुर क्षेत्र में वीतराग वी० परीख, पुष्पाबेन के० परीख एवं उपासक जवेरीलाल संकलेचा के वर्षीतप चल रहा है जो अनुमोदनीय है।

# संवत्सरी महापर्व महाकुंभ का आध्यात्मिक अनुष्ठान है

**रोहिणी, दिल्ली।**

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की मंगल आराधना का अष्टाह्निक महापर्व के अंतर्गत संवत्सरी महापर्व मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि इस महापर्व का अर्थ है—आत्मा की सुरक्षा हेतु सतत् अप्रमत्त बने। इंद्रिय और मन की चंचलता को रोके बिना आत्मोत्थान संभव नहीं। विभिन्न उपक्रमों के द्वारा हमारा किया गया प्रयास सफल व सार्थक बने।

इस अवसर पर साध्वीश्री ने भगवान महावीर का जन्म बाल्यावस्था दीक्षा के बाद साधना काल में आने वाले कष्टों का वर्णन किया। केवल ज्ञान के पश्चात चंदनबाला के व्याख्यान ने श्रोताओं को भावुक बना दिया।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि एक वर्ष में आने वाला यह महापर्व भारतीय अन्य पर्वों से हटकर है। इसमें आमोद-प्रमोद अंतः चेतना की गहराई में उतरकर ही किए जा सकते हैं। यह महापर्व संयम, त्याग, समता का प्रेरक है।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने भगवान ऋषभ के जीवन को सरल भाषा में प्रस्तुत किया एवं जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों को रोचक शैली में प्रस्तुत कर सबको विमुग्ध कर दिया। आचार्य सुधर्मा, जम्बू, प्रभव, शय्यंभव के जीवन-दर्शन पर विशेष प्रकाश डाला।

साध्वी कल्याणयशा जी ने भगवान मल्लिनाथ, अरिष्टेनेमि एवं भगवान पार्श्व के जीवन पर प्रकाश डाला एवं विस्तृत रूप से उनके स्वरूप को प्रस्तुत कर तीर्थंकर परंपरा को नमन किया। इसके पश्चात निन्हव परंपरा पर अपनी सरस शैली से प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी कल्याणयशा जी ने किया और गीतों के द्वारा सबको विमुग्ध कर दिया।

साध्वी कर्तव्ययशा जी ने आगम सूक्तों का विशेष वर्णन किया। भगवान महावीर की वाणी जो कल्याण करती है उसे सुनकर श्रोतागण अभिभूत हो गए। इन्होंने ग्यारह गणधरों के विषय में अपनी सुंदर शैली में प्रस्तुति दी।

साध्वी कुंदनरेखा जी ने अंत में तेरापंथ के ग्यारहवें आचार्यों, साध्वीप्रमुखाओं का विस्तार से वर्णन किया।

# अष्टदिवसीय पर्युषण महापर्व

**अररिया कोर्ट।**

उपासकद्वय इंद्राजमल नाहटा व धर्मेंद्र चोपड़ा के निर्देशन में पर्युषण पर्व आराधना महापर्व का कार्यक्रम चला। इन आठ दिनों में क्षेत्र में धर्म की खूब अच्छी प्रभावना हुई। प्रतिदिन प्रातः प्रार्थना व भक्तामर के साथ सुबह के प्रवचन में उपासकद्वय द्वारा, केंद्र द्वारा निर्देशित विषयों पर व्याख्यान व प्रेरणा दी गई। दोपहर को महिलाओं के लिए तत्त्वज्ञान का समय रहता। सायंकालीन प्रतिक्रमण एवं रात्रिकालीन प्रवचन में नमस्कार महामंत्र, रात्रि भोजन, तनावमुक्ति, अठारह पाप, आहारशुद्धि, तत्त्व चर्चा, प्रबंधन आदि विषय पर वक्तव्य हुए इसके अलावा कहानी, कविता के माध्यम से सरलता से धर्म को समझाया गया, जिससे यहाँ के श्रावक-श्राविकाओं, बच्चों में धार्मिक प्रवृत्ति का अच्छा प्रभाव पड़ा।

उपासक की विशेष प्रेरणा से तपस्याएँ, सतरंगी मौन, सतरंगी सामायिक के साथ-साथ जप दिवस पर २४ घंटों का जप हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों की कक्षा लगने के साथ-साथ सायंकालीन गुरु इंगितानुसार सामायिक हुई।

संवत्सरी के दिन कार्यक्रम लंबे समय तक अनवरत चला। शाम को प्रतिक्रमण में काफी अच्छी संख्या में उपस्थिति हुई। पौषध में छोटे बच्चों के साथ-साथ बड़ों ने भी उत्साह दिखाया।

क्षमापना दिवस नमस्कार महामंत्र के द्वारा विधिवत् प्रारंभ हुआ। गुरुदेव, साधु-साध्वियों, समण-समणियों व श्रावक-श्राविकाओं से सामूहिक खमतखामणा किया गया। तत्पश्चात उपासक इंद्राजमल नाहटा के द्वारा क्षमायाचना किस प्रकार मनाया जाए इसको सरल तरीके से समझाया। उपासक धर्मेंद्र चोपड़ा ने अपनी स्वरचित कविता के माध्यम से खमतखामणा का वक्तव्य दिया तथा गीत का संगान किया।

महिला मंडल की बहनों द्वारा सुमधुर गीत के द्वारा मंगलाचरण हुआ। कार्यक्रम में धर्मचंद चोरड़िया, सभा अध्यक्ष अजय बैद, महिला मंडल अध्यक्षा ज्योति बोथरा सहित अनेक पदाधिकारीगण ने वक्तव्य दिए।

तपस्वी भाई-बहनों का सम्मान महिला मंडल और तेयुप के द्वारा किया गया। नवगठित तेयुप का शपथ ग्रहण का कार्यक्रम भी रखा गया। कार्यक्रम के अंत में नेपाल, बिहार, झारखंड सभा अध्यक्ष भैरूदान भूरा का स्थानीय सभा अध्यक्ष अजय बैद के द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन कविता बोथरा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 - 16 अक्टूबर, 2022



✦ *जहाँ अहिंसा होती है, संयम होता है, वहाँ पर्यावरण की सुरक्षा स्वतः हो सकती है। बिजली, पानी का अपव्यय नहीं करना चाहिए।*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# पर्युषण महापर्व का आयोजन

**जसोल।**

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व मनाया गया।

**खाद्य संयम दिवस :** शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने अपना वक्तव्य गीत के साथ प्रारंभ किया। सभी को पर्युषण पर्व के नियमों से अवगत कराते हुए विशेष रूप से प्रवचन, प्रतिक्रमण एवं पौषध की प्रेरणा दी।

इससे पूर्व साध्वी ध्यानप्रभा जी ने वक्तव्य के साथ कार्यक्रम प्रारंभ किया। साथ ही पर्युषण के महत्त्व को उजागर करते हुए सबको अधिक से अधिक धर्मध्यान करने की प्रेरणा दी। साध्वी श्रुतप्रभा जी ने पर्युषण पर्व के प्रथम दिवस खाद्य संयम की चर्चा करते हुए सभी को प्रेरणा दी। साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान हुआ।

**स्वाध्याय दिवस :** पर्युषण पर्व अध्यात्म की पूर्व भूमिकाओं का एक महत्त्वपूर्ण पर्व है। यह पर्युषण पर्व पुरुषार्थ का पर्व है। पर्युषण पर्व की आराधना के साथ भाद्रव महीने का विधान सोने में सुगंध का काम करता है। यह विचार शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने रखे।

स्वाध्याय दिवस पर साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने कहा कि स्वाध्याय ऐसा माध्यम है जो नए विचारों का सृजन करता है और अपनी विचार संपदा को सुरक्षित रखता है। स्वाध्याय से वह रोशनी मिलती है जो करणीय और अकरणीय का स्पष्ट ज्ञान करा देती है।

साध्वी ध्यानप्रभा जी ने उत्तराध्यन आगम के वाचन पर प्रकाश डाला। तेमम द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया।

**सामायिक दिवस :** पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व का तीसरा दिन अभिनव सामायिक के रूप में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। सर्वप्रथम सामायिक का प्रत्याख्यान एवं त्रिपदी वंदना साध्वी श्रुतप्रभा जी ने करवाई। साध्वी ध्यानप्रभा जी द्वारा सामायिक पर प्रवचन देकर विस्तार से उदाहरण सहित सामायिक पर बताया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि समता की साधना वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके बिना व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल नहीं कर सकता है।

तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली ने विचार व्यक्त किए। मध्याह्न में दो बजे से तीन बजे तक भगवती सूत्र का वाचन का क्रम रहा। रात्रिकालीन कार्यक्रम में 'तेरापंथ की बलिदानी श्राविकाएँ' विषय पर कार्यक्रम रहा।

**वाणी संयम दिवस :** वाणी संयम दिवस पर शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि कैसे बोलें, आवश्यक हो तब बोलें, गर्व-रहित बोलें, कुलीन भाषा बोलें, कम से कम बोलें, मीठी भाषा बोलें, हितकारी भाषा बोलें, मौन रहकर बोलें, संशय रहित भाषा बोलें, सत्यनिष्ठ भाषा बोलें, पापरहित भाषा बोलें, पहले सोचें, फिर बोलें। व्यवहार जगत में भाषा का बहुत मूल्य है। भाषा एक-दूसरे से जोड़ती है। आपसी संवाद का माध्यम बनती है। रिश्तों को मजबूत बनाती है।

साध्वी ध्यानप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान आदि आवश्यक प्रयोग कराते हुए वाणी दिवस पर विस्तारपूर्वक समझाया। साध्वी श्रुतप्रभा जी, साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

**अणुव्रत चेतना दिवस :** अणुव्रत चेतना दिवस पर शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि विश्व की संपूर्ण मानव जाति के लिए ग्राह्य अणुव्रत के सिद्धांतों को आत्मसात कर लिया जाए तो बारूद के ढेर पर खड़ी मानवता को बचाया जा सकता है। अणुव्रत का सम्यक् अर्थबोध हो, यह आवश्यक है। छोटी-छोटी परिभाषाओं में अणुव्रत को समझाया जा सकता है।

साध्वी ध्यानप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान के साथ-साथ उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया। साध्वी श्रुतप्रभा जी ने कहा कि अणु का एक कण समूचे ब्रह्मांड में विस्फोट कर सकता है, वैसे ही अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम हर समस्या को सुलझा सकते हैं।

**जप दिवस :** शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने जप दिवस पर कहा कि मंत्र विविध शक्तियों का खजाना है। मनोयोगपूर्वक जाप करने से वे सारी शक्तियाँ जपकर्ता में धीरे-धीरे प्रगट होने लगती हैं। साध्वीश्री जी ने अंतगड़ व भगवान महावीर स्वामी के २७ भवों के अठारहवें व उन्नीसवें भव का वर्णन किया। साध्वी ध्यानप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान के साथ-साथ उत्तराध्ययन सूत्र का वर्णन किया। साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने जप दिवस के बारे में कहा कि मंत्र कितना शक्तिशाली-प्राणवान है, उससे कहीं अधिक है मंत्र साधक की प्राण-ऊर्जा प्रबल है। नमस्कार महामंत्र आकार में छोटा होता है परंतु उपलब्धियों का खजाना है। रात्रिकालीन कार्यक्रम में 'जिज्ञासा- समाधान' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

**ध्यान दिवस :** पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व का सातवाँ दिन प्रेक्षाध्यान दिवस के रूप में मनाया गया। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने ध्यान दिवस पर कहा कि जैन साधना में ध्यान का वही स्थान है, जो शरीर में गर्दन का है। ध्यान क्या है—बाहर से भीतर की ओर लौटना, किसी एक बिंदु पर मन को स्थिर करना, निर्विचार अंतर्यात्रा, प्रत्येक क्षण जागरूक रहना, गतिमान चित्त की स्थिरता, भीतर की तटस्थता, जीवन की पवित्रता। ध्यान दिवस पर पूरी जानकारी दी। साध्वी ध्यानप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान के साथ उत्तराध्ययन सूत्र का वर्णन किया।

तेरापंथ सभा, जसोल द्वारा पर्युषण महापर्व में आठ व आठ से ऊपर सभी तपस्वी भाई-बहनों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

**सामूहिक क्षमायाचना :** क्षमा करने वाला ही सबसे महान होता है। क्षमादान करने से जहाँ दोनों पक्षों के संबंध मधुर होते हैं, वहीं दोनों के मन निर्मल होते हैं। ये बात शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने सामूहिक क्षमायाचना (मैत्री दिवस) पर कहीं।

उन्होंने कहा कि भूल होना प्रकृति है, अपनी भूल मान लेना संस्कृति है, सुधार कर लेना प्रगति है और क्षमा माँग लेना स्वीकृति है। मन में किसी के प्रति द्वेष या वैर भावना रखने से व्यक्ति का तन व मन दोनों खराब होते हैं इसलिए यदि किसी के मन में किसी के प्रति कोई द्वेष या वैर भावना है तो उसे क्षमा कर दूर करें।

साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। मैत्री दिवस पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़, ओसवाल समाज अध्यक्ष अशोक कुमार ढेलड़िया, तेरापंथ महासभा जोधपुर संभाग प्रभारी गौतम सालेचा, सिवांची-मालाणी तेरापंथ संस्थान अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, ज्ञानशाला प्रभारी संपतराज चोपड़ा, तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली सहित अनेक पदाधिकारीगणों ने विचार व्यक्त किए। श्रावक समाज की ओर से वरिष्ठ श्रावक शंकरलाल ढेलड़िया ने सामूहिक क्षमायाचना की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

# शपथ ग्रहण समारोह

**मालेगाँव।**

प्रवक्ता उपासक पारसमल दुगड़ सहयोगी उपासक रमेश सिंघवी के निर्देशन में तेयुप का शपथ ग्रहण समारोह का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासक पारसमल दुगड़ द्वारा नवकार मंत्र से हुआ। सतीश भंसाली व तेयुप पूरी टीम ने विजय गीत का संगान किया।

अध्यक्ष श्रेणिक कांकरिया ने अपनी टीम की घोषणा की और सभी को शपथ ग्रहण करवाई। अध्यक्ष श्रेणिक कांकरिया ने कहा कि मेरी अध्यक्षता में काम हो मगर नाम तो तेरापंथ युवक परिषद, मालेगाँव का रोशन होना चाहिए। हमें हर कार्य को जवाबदारी और संगठन में रहकर पूरा करना है।

# जप ऊर्जा अनुष्ठान का भव्य आयोजन जयाचार्य योग सिद्धपुरुष थे

**चेन्नई।**

साहूकारपेट स्थित तेरापंथ भवन में समायोजित विशेष अनुष्ठान के अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जैन धर्म में आत्म साधना का विशेष स्थान है। तेरापंथ के आद्यप्रेणता आचार्य भिक्षु का वीतराग के प्रति समर्पण बेजोड़ था। उनका मात्र नाम स्मरण अनेक समस्याओं का समाधायक है। हर भक्त हृदय में वे आराध्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ पर आचार्य परंपरा द्वारा प्रदत्त अनेक प्रदायक मंत्र हैं। इस सच्चाई को समझें, मात्र विघ्न निवारण के लिए नहीं, अपनी आत्मशक्ति की वर्धमानता के लिए मंत्र साधना की जाती है। जयाचार्य द्वारा रचित 'मुणिन्द मोरा' ढाल शक्ति प्रेषण करने वाली मंत्रात्मक विरासत है।

साध्वीश्री ने राजस्थान के कस्बे बीदासर में घटित घटना को विस्तार से व्याख्यायित करते हुए कहा- श्रीमद्जयाचार्य द्वारा रचित यह विशिष्ट स्तवन हर भक्त के रोम-रोम में शक्ति का संचार करने वाला है। संकटों को विमोचन करने वाला है। उनके द्वारा प्रदत्त सिद्धमंत्रों ने समय-समय पर सुरक्षा कवच का काम किया है। इसमें जयाचार्य ने अपने संघ के आचार्यों एवं तपस्वी साधु-साध्वियों का स्मरण किया है। शासन प्रभावक देवी-देवियों का स्मरण भी है, जो विशेष सुरक्षा कवच का निर्माण करता है। जप, साधना शांति का शिखर प्रदान करती है।

प्रवचन से पूर्व साध्वी डॉ० राजुलप्रभा ने ध्यान का विशेष प्रयोग करवाया

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष उगमराज सांड, पूर्वाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, सहमंत्री देवी लाल हिरण के साथ कार्यकारणी सदस्यगण, महिला मंडल की टीम और समाज के कई गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामय उपस्थिति रही।

# जीवन में प्राण शक्ति का बहुत महत्व

**माधावरम्, चेन्नई।**

मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में जय समवसरण, जैन तेरापंथ नगर, विघ्न हरण ढाल पर विशेष प्रवचन माला का शुभारंभ हुआ।

मुनिश्री ने कहा कि ध्यान और जपयोग के बिना हमारी साधना अधूरी है। धार्मिक व्यक्ति को प्रतिदिन ध्यान और जपयोग का अभ्यास करना चाहिए। भगवान महावीर की वाणी में जप का आध्यात्मिक यज्ञ के रूप में प्रतिपादन किया गया है। ध्यान से पूर्व संचित क्लेष दूर होता है तथा चित्त शुद्ध होता है। जपयोग से शक्तिशाली कवच का निर्माण होता है। जिससे किसी प्रकार के अनिष्ठ का जीवन में प्रवेश नहीं होता है। परिवार की शांति के लिए सामूहिक मंत्र साधना का भी बहुत महत्व है। हमारा शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्राण-शक्ति पर निर्भर है। भिन्न साधना के द्वरा प्राण-शक्ति बलवान होती है।

मुनिश्री ने पंच ऋषि स्तवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उसके प्रभाव, प्रयोग और रहस्य पर भी विचार व्यक्त किए। मुनि नरेश कुमार जी ने कहा हमें सकारात्मक सोच विकसित करनी चाहिए। विचारों का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसा ही उसका जीवन बन जाता है।

# सर्वाइकल कैंसर वैसीनेशन

**विजयनगर।**

संपूर्ण भारत वर्ष में प्रथम बार सर्वाइकल वैक्सीन का पहला वैक्सीनेशन ड्राइव, विजयनगर सभा भवन में आयोजित किया गया।

सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने स्वागत अभिनंदन किया। मुख्य अतिथि महासभा दक्षिणांचलिक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा ने कहा कि विजयनगर सभा समय-समय पर अच्छा और नए आयामों के साथ कार्य कर रही है।

मुख्य अतिथि केडीपीएमए अध्यक्ष हरीश के० जैन ने कहा कि यह हमारे परिवार के बच्चों के लिए बहुत अच्छा कार्य तेरापंथ सभा कर रही है।

टीपीएफ के अध्यक्ष लक्ष्मीपत मालू ने कार्यक्रम की सराहना की। शंकरा कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर से डॉक्टर अन्नपूर्णा ने कहा कि यह टीकाकरण पूरे विश्व में लगाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सभी को एक बार चेकअप कराकर वैक्सीनेशन करवाना।

अभिभावकों के सवालों का जवाब देते हुए विस्तृत जानकारी डॉ० अन्नपूर्णा ने बताई। उसके बाद सभी बच्चियों को वैक्सीन लगाई गई। इस अवसर पर सभा, तेयुप एवं महिला मंडल के पदाधिकारी एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम के संयोजक सुरेश मांडोत ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री मंगल कोचर ने किया।

# पर्वाधिराज पर्युषण पर्व कार्यक्रम

**रायसिंहनगर।**

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में तेममं, तेयुप के सहयोग से पर्वाधिराज पर्युषण पर्व उत्साह से मनाया गया। उपासिका पुष्पा बरड़िया एवं हर्षलता दुधोड़िया के निर्देशन में धार्मिक आराधना व्यवस्थित रूप से हुई।

खाद्य संयम दिवस, स्वाध्याय दिवस, सामायिक दिवस, वाणी संयम दिवस, अणुव्रत चेतना दिवस, जप दिवस एवं ध्यान दिवस बहुत ही उत्साह व उमंग से मनाया गया। प्रतिदिन प्रातःकाल गुरु वंदना, भक्तामर, चौबीसी का संगान किया गया। सुबह के व्याख्यान के अंतर्गत कालचक्र, तीर्थंकर परंपरा, भगवान ऋषभ देव, भगवान मल्लिप्रभु, भगवान अरिष्टनेमि, पार्श्वप्रभु एवं भगवान महावीर के पूर्व सत्ताइस भवों का भावपूर्ण विवेचन उपासिका बहन पुष्पा बरड़िया ने किया। उपासिका हर्षलता दुधोड़िया ने गुरुदेव द्वारा निर्देशित विशेष दिवसों पर सरल भाषा में विशद विवेचन किया। सभी विषयों पर गीतिकाओं का मधुर संगान किया गया।

दोपहर को जिज्ञासा समाधान व पच्चीस बोलों को समझाया गया। ज्ञानशाला के बच्चों के द्वारा 'ज्ञानशाला संस्कारों की शाला' विषय पर परिसंवाद प्रस्तुति दी गई। सायंकालीन गुरुवंदना व प्रतिक्रमण नियमित रूप हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रम में बंधन टूटे वंदन से, आचार्य भिक्षु के सिद्धांत दान, दया व लौकिक लोकोत्तर को व्याख्यायित किया गया। आचार्यों के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डाला गया। प्रश्न मंच व अभिनव अंत्याक्षरी का कार्यक्रम रखा गया।

तपस्या सामायिक जप, मौन आदि की आराधना करने में श्रावक-श्राविकाएँ जागरूक रहें। सभी कार्यक्रमों में सभा के अध्यक्ष रविंद्र जैन, मंत्री संजय बोथरा, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु बोथरा, मंत्री सुनीता पटावरी, टीपीएफ, तेयुप एवं पूरे श्रावक समाज का सहयोग प्राप्त हुआ।

# पर्युषण महापर्व आराधना

**इरोड।**

पर्युषण महापर्व की आराधना उपासक महेंद्र कुमार दक, सहयोगी उपासक राजेंद्र कुमार कोचर तथा से सहयोगी उपासक राजेश आच्छा के तत्त्वावधान में आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत माहौल के साथ संपन्न हुई।

उपासकत्रय के दस दिवस प्रवास के दौरान दैनिक विषयों पर प्रवचन के साथ-साथ जैन परंपरा एवं तीर्थंकर चरित्र, भगवान महावीर के पूर्व भव, गृहस्थ काल, साधना काल, केवल्य जीवन, जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों का विवेचन, तेरापंथ का उद्भव, आचार्य भिक्षु एवं उत्तरवर्ती आचार्यों का जीवन चरित्र तथा तेरापंथ दर्शन पर प्रातःकालीन प्रवचनों की शृंखला चली।

अणुव्रत चेतना दिवस पर गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत के मुख्य आयामों को लेकर बारह व्रत, पाँच महाव्रतों की व्याख्या एवं भगवान महावीर स्वामी का जन्म वाचन पर जीवन, साधना, उनके उपसर्गों, कष्टों को लेकर जीवन वर्णन और आगार, अणागार धर्म पर प्रकाश डाला।

जप दिवस के दिन २४ घंटों का तेरापंथ भवन में अनवरत नमस्कार महामंत्र जाप चला, जिसमें स्थानीय सभा, तेयुप तथा महिला मंडल की संपूर्ण एवं सराहनीय सहभागिता रही।

पर्युषण महापर्व के दौरान उपासक भाईयों द्वारा परिवारों से व्यक्तिगत संपर्क एवं प्रेरणा की निष्पत्ति स्वरूप क्रम में तपस्याएँ भी हुई। स्थानीय उपासक प्रकाश पारख के साथ ही स्थानीय सभा एवं तेयुप के भाईयों तथा महिला मंडल एवं ज्ञानशाला की बहनों का पूर्ण सहयोग रहा। जैन विद्या, तत्त्वज्ञान तथा विज्ञ की परीक्षाओं में सफल ज्ञानार्थियों का सम्मान किया गया।

मैत्री दिवस के दिन सामूहिक क्षमापना समारोह में उपासक का साहित्य द्वारा सम्मान किया। परमपूज्य गुरुदेव एवं उपासकत्रय के प्रति कृतज्ञता के स्वरों में महासभा उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत, स्थानीय सभा के पूर्व अध्यक्ष हीरालाल चोपड़ा, सभाध्यक्ष सुरेंद्र भंडारी, तेयुप अध्यक्ष सुभाष बैद, तेममं अध्यक्षा सुनीता भंडारी, ज्ञानशाला से पिंकी भंसाली, उपासक प्रकाश पारख, वरिष्ठ श्रावक धर्मचंद बोथरा एवं वरिष्ठ श्राविका मंजुबाई बोथरा ने उद्गार के साथ पर्युषण महापर्व आराधना की सफलता पर सभी को बधाई दी। संचालन एवं आभार ज्ञापन सभा मंत्री दुलीचंद पारख ने किया।

✦ *मन में दुर्विचारों का प्रवेश होने देना मन का असंयम और मन की अनपेक्षित चंचलता को कम करना मन का संयम होता है।*
**– आचार्यश्री महाश्रमण**

## अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

| | |
|---|---|
| ✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021 | 51,00,000 |
| ✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर | 5,00,000 |
| ✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना | 5,00,000 |
| ✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा | 5,00,000 |
| ✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत | 5,00,000 |
| ✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा | 5,00,000 |
| ✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा | 5,00,000 |
| ✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी | 5,00,000 |
| ✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर | 5,00,000 |
| ✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर | 5,00,000 |

# संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

## नामकरण संस्कार

**दिल्ली।**

लाडनूं निवासी, दिल्ली प्रवासी हर्षित-निकिता सुराणा की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन गिड़िया, हेमराज राखेचा ने संपादित करवाया।

तेयुप दिल्ली की तरफ से सुराणा परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। सुराणा परिवार की तरफ से दीपचंद सुराणा ने पधारे हुए संस्कारकों व अतिथियों का आभार ज्ञापन किया।

## सगाई समारोह

**पर्वत पाटिया।**

जोरावरपुरा निवासी, पर्वत पाटिया प्रवासी विमलचंद बुच्चा के पुत्र अभिषेक बुच्चा एवं मलसीसर निवासी बारीपदा प्रवासी सुरेंद्र कुमार दुगड़ की सुपुत्री हर्षिता के सगाई का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपादित किया गया।

संस्कारक रवि मालू एवं पवन बुच्चा ने कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया। तेयुप की तरफ से मंगलभावना यंत्र भेंट स्वरूप दिया तथा सपना दुगड़ ने पधारे हुए संस्कारकगण एवं सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

## नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

**सूरत।**

ठीकरावास निवासी, अमरोली, प्रवासी राहुल कुमार, अंकित कुमार टेबा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, अरविंद बाफना, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया।

राहुल व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व सभी पारिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

# प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

**हैदराबाद।**

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का विषय था–'कैसे हम अपने को सुखी और स्वस्थ रखें'। प्रथम सत्र में योग का सघन प्रशिक्षण दिया गया। थायराइड और सर्वाइकल को दूर करने के प्रयोग साध्वी कल्पयशा जी ने बताए।

साध्वीश्री जी ने कहा कि योग हमें केवल निरोग ही नहीं करता, बल्कि हमारी कार्यक्षमता को भी बढ़ाता है।

दूसरे सत्र में साध्वी रश्मिप्रभा जी ने अनित्य अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाते हुए कहा कि यदि आप आसक्ति को कम करना चाहते हैं और वैराग्य को बढ़ाना चाहते हैं तो अनित्य अनुप्रेक्षा एक बहुत ही कारगर उपाय है।

तीसरे सत्र में साध्वीश्री जी ने कहा कि यदि हम दुनिया को बदला चाहते हैं तो उसका सशक्त माध्यम है–प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षाध्यान के द्वारा हम अपनी चेतना का रूपांतरण कर सकते हैं।

साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि आज का व्यक्ति जितना दुनिया के बारे में जानता है उतना ही अपने आपसे अनजान है। आपने आगे कहा कि सबसे पहले अपने विचारों को देखें, अपने श्वास को देखें, श्वास को देखते-देखते एक दिन ऐसा भी आएगा कि हम आत्म-साक्षात्कार की भूमिका तक पहुँच जाएँगे।

चौथे सत्र में कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया गया। आत्मा भिन्न-शरीर भिन्न की अनुभूति का नाम है–कायोत्सर्ग। साध्वी संपत्तिप्रभा जी ने जप योग का प्रयोग कराया। साध्वी कल्पयशा जी व साध्वी रश्मिप्रभा जी ने स्वस्थ रहने के टिप्स बताए। नविता नाहटा ने प्रेक्षाध्यान की प्रारंभिक जानकारी दी।

शिविर के सफलतम आयोजन में सभा के सहमंत्री धर्मेंद्र चोरड़िया, हुक्मीचंद कोटेचा, निर्मल बैंगानी, महेंद्र सुराणा, अरिहंत गुजरानी, प्रकाश दफ्तरी, खुशहाल भंसाली आदि ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। शिविर में लगभग ७० भाई-बहनों ने भाग लिया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 - 16 अक्टूबर, 2022



✦ *सेवा और शुचिता–दोनों का योग बना रहे तो 'नैतिकता की सरिता : महक उठे मानवता' की बात साकार हो सकती है।*
**–आचार्यश्री महाश्रमण**

### विकास महोत्सव के विविध आयोजन

# विकास के श्लाका पुरुष थे आचार्यश्री तुलसी

## फरीदाबाद

साध्वी शुभप्रभा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी शुभप्रभाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी की जीवन महागाथा को पढ़ें तो ऐसा लगता है कि उन्होंने जिंदगी को सहज, सरल बनाने के लिए कुछ बातों को नजरअंदाज किया, कुछ को बर्दाश्त किया और सही समय पर फैसले लेकर नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए। विकास शब्द का विश्लेषण करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा–वि-विनयशीलता हो, का–कार्यशीलता तथा स–सहनशीलता का आभूषण सभी पहनें।

उन्होंने कहा कि शरीर अस्वस्थ, मन का असंतुलन, शब्दों में कड़वापन, भावों में मलिनता होने से विकास नहीं हो सकता। विकास की आधारशिला–अच्छा पढ़ो, अच्छा सुनो, अच्छा देखो, अच्छा सोचो, अच्छा बोलो, अच्छा करो और अच्छा जीवन जीओ।

साध्वी मंदारयशा जी ने भाषण दिया। साध्वी अनन्यप्रभा जी ने विकास महोत्सव के सदंर्भ में कविता पाठ किया। सभामंत्री संजीव बैद, बहादुर सिंह दुगड़, स्नेहा दुगड़, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने शब्दचित्र, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने तुलसी अष्टकम् एवं विकास की वर्णमाना की प्रस्तुति दी। शर्मिला, रचना आदि बहनों ने मंगलाचरण किया। अणुव्रत समिति के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी कांतयशा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

## रोहिणी, दिल्ली

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव के कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि विकास हर जीवन का लक्ष्य होता है। आवश्यक है वह विकास अध्यात्म की गहराई का स्पर्श करे। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की महान दिशा में प्रस्थान हो। इसके साथ-साथ जन-जन की चेतना भी सत्य का स्पर्श कर आत्मोत्थान करे। तेरापंथ धर्मसंघ की विकास यात्रा अध्यात्म की यात्रा है, अंतर्शोधन करें।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन-विज्ञान जैसे अवदानों को संपूर्ण मानव जाति के उत्थान हेतु जहाँ प्रारंभ किया गया, वहीं आगम संपादन जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी एवं तत्त्वज्ञान जैसे आध्यात्मिक गतिविधियों का सूत्रपात हुआ। वर्तमान में जैन धर्म का पर्याय बन चुका है तेरापंथ धर्मसंघ।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने नए-नए सूर्य उगाए, जिससे तेरापंथ धर्मसंघ आलोक से आलोकित हो रहा है। दसवें अधिशास्ता ने हमें विकास महोत्सव देकर संघ को उपकृत किया। विकास का प्रारंभ आचार्य भिक्षु आदि आचार्यों से हुआ।

साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी दिवास्वप्न देखते थे और अपने श्रम से उसे पूरा कर दुनिया को राह दिखाते थे। उन्होंने दुनिया में परिमार्जन के लिए अणुव्रत का सिंहनाद किया। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने गीत प्रस्तुत किया।

रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन ने कहा कि विकास महोत्सव तेरापंथ धर्मसंघ के विकास की समीक्षा करें तथा उत्तरोत्तर विकास करते रहें। आचार्य तुलसी विकास के पर्याय हैं, जिन्होंने अपने अथक श्रम से शासन में अनेक अवदान देकर उपकृत किया है। सुशीला पुगलिया ने कहा कि आचार्य तुलसी के आचार्य पद का विसर्जन और युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होना ही विकास महोत्सव की उत्पत्ति है। प्रवीण सिंघी ने कहा कि आचार्य तुलसी को नमन करती हूँ, कविता की प्रस्तुति दी।

साध्वी कर्तव्ययशा जी ने तुलसी अष्टकम् के संगान से मंगलाचरण कर कार्यक्रम को प्रारंभ किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्याणयशा जी ने किया। इस अवसर पर तेरांपथ सभा अध्यक्ष विजय जैन, महामंत्री राजेंद्र सिंघी, मंत्री सुशील जैन, परामर्शक संजय जैन, कैलाश जैन, कार्यकारिणी सदस्य बसेसर जैन आदि एवं महिला मंडल दिल्ली से प्रवीण सिंघी, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका सुशीला पुगलिया उपस्थित थे।

## नाथद्वारा

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी के सान्निध्य में २९वाँ विकास महोत्सव मनाया गया। मुनि अतुल कमार जी ने कहा कि जीवन पर्यन्त चलने वाली निरंतर प्रक्रिया को विकास कहते हैं। परिवर्तन की क्रमिक शृंखला ही विकास है। हर वस्तु या प्राणी में कुछ न कुछ मूल या गुण विशेष रूप से होते हैं। पर आरंभ में ये छिपे रहते हैं। अवसर व आयु के अनुसार इन गुणों को बाहर दिखाई देने का अवसर मिलता है। ये धीरे-धीरे बाहर आ जाते हैं तथा बढ़ने लगते हैं। आंतरिक गुणों का बाहरी रूप में बढ़ना ही विकास कहलाता है।

आचार्य तुलसी विकास पुरुष थे। जिन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को कई आयाम दिए, जिससे संघ एवं समाज में नई जागृति हुई। आचार्य तुलसी ने अपने जीवनकाल में ही आचार्य पद का विसर्जन करके अपने उत्तराधिकारी महाप्रज्ञ जी को आचार्य बना दिया था तथा कहा कि मैं मुनि तुलसी ही रहना चाहता हूँ। आचार्य महाप्रज्ञ के उर्वर मस्तिष्क ने आचार्य तुलसी की आज्ञा से कहा कि हम आज के दिन को विकास महोत्सव के रूप में मनाएँगे, क्योंकि आप विकास पुरुष हैं तथा आपने तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक तरह के विकास के कीर्तिमान बनाए।

मुनि रविंद्र कुमार जी ने मंगलपाठ सुनाया। विकास महोत्सव कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण गीतिका की प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष दीपेश धाकड़ ने विचार रखे। कमलेश कुमार धाकड़ ने विकास गीत का संगान किया। शांता बाफना एवं पुष्पा तलेसरा ने विचार रखे। राज्यसभा सांसद लहर सिंह सिरोया ने मुनिद्वय के दर्शन एवं उनसे वार्तालाप की। तेरापंथ समाज की ओर से उनका स्वागत व सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

## राजराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में आचार्य तुलसी के विकास महोत्सव का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। शासनश्री ने आचार्य तुलसी को साध्वी श्रेणी के उत्थान का जनक बताया। उनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों की सराहना की। उसी की निष्पत्ति है आज साध्वियाँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ी हैं।

समण श्रेणी, उपासक श्रेणी, महिला मंडल, तेयुप, ज्ञानशाला सभी गुरु तुलसी की ही देन है। तुलसी गणी ने तेरापंथ समाज ही नहीं समग्र राष्ट्र के विकास में अहम भूमिका निभाई।

साध्वी अर्हमप्रभाजी, साध्वी रतनप्रभा जी ने गीतिका के साथ अपनी भावनाएँ व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी अमितरेखा जी ने किया। सभाध्यक्ष छतरसिंह सेठिया, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, तेमम अध्यक्ष लता बाफना, उपाध्यक्ष शोभा बोथरा ने आचार्य तुलसी द्वारा धर्मसंघ में किए गए विकास कार्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

## माधावरम्, चेन्नई

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में जय समवसरण, जैन तेरापंथ नगर में विकास महोत्सव एवं शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि आज का समाज अनैतिकता, भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता की बीमारी से पीड़ित है। इस स्थिति में शिक्षकों से बहुत आशाएँ और अपेक्षाएँ हैं। वे भावी राष्ट्र के निर्माता हैं।

जीवन विज्ञान का कार्यक्रम नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण का असांप्रदायिक कार्यक्रम है। इसके यौगिक प्रयोगों के अभ्यास से आंतरिक शक्तियों को जगाया जा सकता है तथा स्वभाव का सुधार और बदलाव हो सकता है।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी का जीवन अहिंसा, अध्यात्म और अनेकांत की प्रयोगशाला था। वे विरोधी विचारों और परंपराओं के प्रति उदार और सहिष्णु थे। उन्होंने लंबी-लंबी पदयात्राएँ कर राष्ट्र में एकता और नैतिका की ज्योति प्रज्वलित की। मुनि नरेश कुमार जी ने गीत का संगान किया।

## सुनाम

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने विकास महोत्सव के अवसर पर कहा कि आचार्यश्री तुलसी तेरापंथ के प्रथम आचार्य थे, जो २२ वर्ष की अवस्था में आचार्य बने और आचार्य बनते ही उन्होंने जिस गति से कार्य को आगे बढ़ाया तेरापंथ धर्मसंघ का मानो कायाकल्प कर दिया। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से जैन-अजैन, हिंदू-मुसलमान सबको नैतिक बनाकर शुद्ध-सात्त्विक जीवन जीने की कला सिखाई। उनका प्रत्येक दूरदर्शी चिंतन आत्मकल्याण के साथ परिवार, समाज, देश और विश्व निर्माण में निमित्त बना।

इस अवसर पर मुनि अमन कुमार जी, मनि नमि कुमार जी, केवलकृष्ण गोयल, रामस्वरूप जैन, सुरेश जैन, संदीप जैन, अरिहंत जैन, विपिन जैन, मक्खनलाल जैन, पुष्पा जैन, सुनीता जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। शिक्षक दिवस पर भी मुनिश्री ने कहा कि शिक्षक विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करके परिवार, समाज, देश की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं। विद्यार्थियों को भी शिक्षकों के प्रति विनम्र रहना चाहिए।

## गंगाशहर

मुनि शांति कुमार जी, मुनि जितेंद्र कुमार जी एवं सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन हुआ। तेरापंथ भवन में आयोजित संघीय कार्यक्रम में साधु-साध्वीवृंद ने आचार्यश्री तुलसी के व्यक्तित्व, कर्तृत्व के बारे में व्याख्यायित किया।

मुनि शांति कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी विकास के पुरोधा आचार्य थे। उन्हें अनुशासन प्रिय था। वे किसी साधु को प्रोत्साहित करते तो गलती होने पर आँख दिखाकर मार्ग भी प्रशस्त कर देते थे। उन्होंने धर्मसंघ को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की।

मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी का पाट महोत्सव विकास महोत्सव के रूप में सकल धर्मसंघ द्वारा मनाया जाता है। आचार्यश्री तुलसी के युग में संघ ने चहुँमुखी विकास किया। शिक्षक दिवस पर मैं उनका एक महान शिक्षक के रूप में स्मरण करना चाहूँगा। उन्होंने संघ में प्रतिभाओं का मूल्यांकन कर एक-एक को आगे बढ़ाया।

साध्वी कीर्तिलता जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी विकास पुरुष थे। उनके जीवन में अनेकों उतार-चढ़ाव आए, किंतु धीरता, स्थिरता से उन्होंने हर परिस्थिति को पार किया।

इस अवसर पर मुनिवृंद एवं साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा, गंगाशहर के अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने अपने विचार व्यक्त किए।

## सरदारपुरा, जोधपुर

अमरनगर स्थित तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में व सरदारपुरा स्थिति मेघराज तातेड़ भवन में साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट पर्व विकास महोत्सव का आयोजन किया गया।

तेयुप, सरदारपुरा के मंगलाचरण से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में तेरापंथी महासभा पंचमंडल सदस्य दिलीप सिंघवी, महासभा उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, महासभा सदस्य मर्यादा महोत्सव कोठारी ने विकास महोत्सव पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

साध्वी भव्यप्रभा जी ने बताया कि विकास का यह उत्सव, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की सोच है। साध्वी करुणाप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य तुलसी ने अनेक विकास के आयाम खोले। गुरुदेव महाप्रज्ञ जी ने उन्हीं आयामों, आचार्य तुलसी की संघ को देन को देखकर संघ की तरफ से विकास महोत्सव आयोजित करने का आग्रह किया।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि आचार्य तुलसी विकास के पुरोधा थे, जिन्होंने समाज के सभी वर्ग का चहुँमुखी विकास किया।

महासभा के रूप को निखारा, नारी जाति का उत्थान किया। नारी शक्ति को मंच पर आकर बुलवाया यह एक क्रांतिकारी कदम था। पर्दा प्रथा का आपने विरोध किया। साध्वियों को संतों के समकक्ष स्थान दें विकास के सभी अवसर प्रदान किए।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी महकप्रभा जी ने किया।

# आचार्य भिक्षु चरमोत्सव समारोह का आयोजन

**रायपुर।**

समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी, समणी सुमनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ अमोलक भवन में आचार्य भिक्षु चरमोत्सव पर विशेष प्रवचन का आयोजन श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

समणी करुणाप्रभा जी ने तेरापंथ धर्मसंघ के प्रवर्तक व प्रथम आचार्यश्री भिक्षु स्वामी के जीवन के संघर्षों से परिचित कराया। समणी सुमनप्रज्ञा जी ने गीत प्रस्तुत किया। समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी ने कहा कि तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं, परिभाषित किया। समणीवृंद ने गीत का संगान किया। संघ गीत द्वारा आयोजन समाप्त हुआ।

# भिक्षु चरमोत्सव के विविध आयोजन

## रोहिणी, दिल्ली

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में २२०वाँ भिक्षु चरमोत्सव का कार्यक्रम सभा भवन में रखा गया। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रणेता आचार्य भिक्षु आत्मवेत्ता थे, जिन्होंने आत्म खोज हेतु गृहस्थ जीवन का त्याग किया। भगवान महवीर की वाणी आगमों का गठन अध्ययन किया और पूर्ण समर्पण के साथ उसका आचरण भी किया।

साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु इस संघ के प्राण हैं, त्राण हैं और प्रतिष्ठा है। जिन्हें न केवल तेरापंथी अनुयायी, न केवल जैन धर्म बल्कि अन्य मतावलंबी भी उनका स्मरण करते हैं। आचार्य भिक्षु में ऐसा मंत्र बन गया है, जो दुनिया को आधि-व्याधि से मुक्त करता है।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु क्रांतिकारी महापुरुष थे। जिन्होंने आध्यात्मिक क्रांति द्वारा भगवान महावीर की वाणी को आत्मोधार किया। कष्टों की परवाह नहीं की।

अभातेममं की पूर्वाध्यक्षा पुष्पा बैंगाणी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का संपूर्ण जीवन दृष्टांतों की यात्रा से यातायित है, जो हमें पग-पग पर प्रतिबोध भी देता है और आचार्य भिक्षु की औत्पत्ति को बुद्धि से भी रूबरू कराता है।

तेरापंथी सभा, रोहिणी के अध्यक्ष विजय जैन ने कहा कि आचार्य भिक्षु का नाम हमारे भीतर नव चेतना का संचार करता है। अभय बनाता है। चलना सिखाता है, जीने का विज्ञान बताता है—शततः नमन! राजूबाई, बिमला सुराणा ने मंगलाचरण किया।

साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा कि मानवता के मसीहा क्रांतिकारी आचार्य भिक्षु का तेरापंथ धर्मसंघ विकास, विश्वास एवं विनय का जीवंत रूप है। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया।

## साहूकारपेट

तेरापंथ भवन में आयोजित आचार्य भिक्षु चरमोत्सव पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि गतिशीलता का नाम है—आचार्य भिक्षु। उपनिषद् साहित्य का 'चरैवेति-चरैवेति' सूत्र उनके जीवन का लक्ष्य रहा। चरैवेति संकल्प के कारण तेरापंथ तीर्थ बन गया। अनेक कष्टों, विघ्नों को हरण करने वाले महामना भिक्षु आजीवन श्रमशील बनकर साधना करते रहे।

साध्वीश्री जी ने भगवान महावीर के जीवन-दर्शन, साधना के साथ आचार्य भिक्षु के जीवन-दर्शन के तुलनात्मक अनेक ऐतिहासिक प्रसंग सुनाए। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु कृतज्ञता के विशिष्ट उदाहरण बने। आज आवश्यकता है, कृतज्ञता का यह महान सूत्र घर, परिवार और समाज के सदस्यों में संक्रांत हो। आचार्य भिक्षु ने अपने अंतिम समय तक शिष्य संपदा को शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रोत्साहन और बहुमान दिया। उनके द्वारा प्रदत्त सम्मान और विनयभाव की परंपरा हमारे जीवन को सरसब्ज बनाने वाली है।

साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने भिक्षु-स्तवन प्रस्तुत किया। साध्वी सिद्धियशा जी ने काव्य शैली में आचार्य भिक्षु की अभिवंदना की।

तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी एवं भिक्षु स्मृति साधना के संयोजक हरीश भंडारी ने मंच संचालन किया। तेयुप द्वारा प्रायोजक रांका परिवार का सम्मान किया गया।

## कांदिवली

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का नाम हमारी साँसों में समाया हुआ है। उनके नाम स्मरण से ही नई ऊर्जा का संचार होता है।

साध्वी डॉ० योगक्षमप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु भगवान महावीर की वाणी के भाष्यकार थे। उन्होंने जैन धर्म के मौलिक सूत्रों की व्याख्या की।

समणी निर्देशिका सत्यप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु में श्रद्धा और तर्क दोनों का समान बल था। जिनवाणी पर अपार श्रद्धा के साथ तत्त्व की व्याख्या तर्क के साथ की।

साध्वी लावण्यप्रभा जी व समणी रोहिणीप्रज्ञा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी।

प्रवक्ता उपासिका पुष्पा मेहता, सह-संयोजिका निशा दुगड़, तेमम मुंबई अध्यक्ष रचना हिरण आदि ने उद्गार प्रकट किए। तेमम, कांदिवली की बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। संचालन उपासिका विमला दुगड़ ने किया। धन्यवाद आभार ज्ञापन प्रकाश हिरण ने किया।

## गंगाशहर

मुनि शांति कुमार जी, मुनि जितेंद्र कुमार जी एवं साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आचार्यश्री भिक्षु का २२०वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुनि शांतिकुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक महान अध्यात्म गुरु थे। उन्होंने तत्कालीन शिथिलाचार के विरुद्ध क्रांति कर धर्म के सही मूल्यों की स्थापना की।

मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का नाम ही एक चमत्कारी मंत्र है। उन्होंने अपनी कर्तृत्व से, अपनी साधना से, अपनी आचार निष्ठा और अधर्म के प्रति सत्य का बिगुल बजाकर एक अलग पहचान बनाई। आचार्य भिक्षु का दिया एक गुरु एक विधान का सूत्र आज तेरापंथ धर्मसंघ का प्राण बना हुआ है।

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म भी शुक्ल पक्ष में आता है और महाप्रयाण भी शुक्ल पक्ष में आता है। यह एक विरल संयोग है। आचार्य भिक्षु एक महान प्रकाश पुंज थे। उनके नाम स्मरण से संकट टल जाते हैं।

इस अवसर पर मुनि सुधांशु कुमार जी ने आचार्यश्री भिक्षु के मर्यादा, अनुशासन पर प्रकाश डाला। मुनि श्रेयांस कुमार जी, मुनि अनेकांत कुमार जी, साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में तेरापंथ कन्या मंडल ने आचार्य भिक्ष के जीवन पर संवाद द्वारा रोचक प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा, किशोर मंडल संयोजक दीपेश बैद ने अपने विचार रखे।

## अमराईवाड़ी-ओढ़व

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु का २२०वाँ चरमोत्सव का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा सिंघवी भवन में मनाया गया।

शासनश्री साध्वीजी के महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु अध्यात्म शिरोमणी थे, वे एक पुण्यशाली नक्षत्र और एक महान आचार्य थे। वे एक सिद्धांत थे। वे एक सत्य थे। सत्य को उन्होंने तल तक जाना और जीया। उनकी पदरज पारस से भी ज्यादा पवित्र थी। साध्वी संवेगप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु प्रकाश बनकर आए, अपने प्रकाश में जन-जन को सन्मार्ग दिखाकर आज के दिन समाधिपूर्वक महाप्रयाण कर गए। वे एक मणिधारी पुरुष थे।

साध्वी तरुणप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु को सत्य का पुजारी बताया। साध्वी नंदिताश्री जी ने गीत का संगान किया। सभाध्यक्ष रमेश, महिला मंडल अध्यक्ष संगीता, तेयुप अध्यक्ष हेमंत ने अपने विचार आचार्य भिक्षु के प्रति रखे। कार्यक्रम का संचालन तेयुप कोषाध्यक्ष प्रेम पगारिया ने किया। आभार ज्ञापन विपुल मांडोत ने किया।

# साध्वी धर्मयशा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

## अर्हम्

● **मणि विजय बैद** ●

जय बोलो धर्मयशा जी की
समतामय आनंदमय प्रण की

बीदासर में थे जन्म लियो
गोलछा कुल ने थे सुयश दियो
बलिहारी जागृत जीवन की।।

श्री तुलसी स्यूँ दीक्षा पाई
महाप्रज्ञ दृष्टि स्यूँ मुस्काई
गरिमा गातां महाश्रमण गण री।।

भिक्षु गण रो गौरव गाता
गुरु दर्शन पाकर हरसाता
बलिहारी थांरे दृढ़ मन की।।

तप रो थे दीप जलायो हो
जीवन नै सफल बणायो हो
जय बोलो पावन जीवन की।।

थांरा जीवन हो ज्योतिर्मय
गुरु भक्ति में रहता तन्मय
जय बोलो सहज समर्पण की।।

जद-जद म्है सेवा में आता
तप त्याग म्हानै करवाता
शिक्षा देता संयम धन की।।

**लय : जय बोलो संघ सितारे----**

---

## अर्हम्

● **प्रस्तुति हेमंत रंजू गोलछा** ●

थे गण रो गौरव गायो जी-महावीर दरबार
थे गण रो गौरव गायो जी-महाश्रमण दरबार
थे कुल पर कलश चढ़ायो जी-धर्मयशाजी सुखकार।।

थे संयम शंख बजायो
अभिनव इतिहास बणायो
अर्हम् रो ध्वज फहरायो जी
महाश्रमण दरबार।।

बीदासर, गौरवशाली-गावै महिमा निराली
थे कल्पतरु लहरायो जी
महाश्रमण दरबार।।

नवकार मंत्र रो शरणो लेकर गुरुवर रो शरणो
थे जीवन नै चमकायो जी
धर्मयशा जी सुखकार।।

जल्दी कांई सुरपुर री
अंतिम सांसा जयपुर री
म्हानै विश्वास न आयो जी
धर्मयशा जी सुखकार।।

म्है देखीं थांरी समता, आत्मा में रहता रमता
भिक्षु गण नै दीपायो जी, धर्मयशा जी सुखकार।।

**लय : महाप्राण गुरुदेव----**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 - 16 अक्टूबर, 2022



✦ *न्यायालय की प्रतिष्ठा और गरिमा बनाए रखने के लिए अपेक्षित है कि न्यायाधीशों के मन में सच्चाई के प्रति निष्ठा बनी रहे।*
**–आचार्यश्री महाश्रमण**

# आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

## प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

### केवल सुनने की मंजिल नहीं

ध्यान-शिविर कोई पुस्तक नहीं है जो १०० पृष्ठ का सारांश दो पृष्ठों में लिखकर समझा दिया जाए। यहाँ तो प्रत्येक तत्त्व को अनुभव के स्तर पर जानने, समझने और प्रयोग करने की बात सोचकर ही प्रवेश पाना चाहिए। क्योंकि केवल सुनने या जानने से मंजिल प्राप्त नहीं हो सकती।

जिन लोगों के मन में शांत, स्वस्थ और एकाग्र बनने की अभिरुचि जग गई है वे सब आकर्षणों को छोड़कर अपने आपको साधना के लिए समर्पित कर दें। फिर देखें उसका क्या परिणाम आता है। किसी भी प्रक्रिया मे स्वयं को खपाए बिना उसके परिणाम जानने या उससे लाभान्वित होने की बात पूरी कैसे हो सकती है? मरने के बाद जिस स्वर्ग की प्राप्ति है, उसे जीते-जी कैसे पाया जा सकता है?

दो मित्र थे। काफी घनिष्ठता थी उनमें। एक मित्र मरकर स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। उसने अपने मित्र को स्वप्न में दर्शन दिया। वह बोला–'तुम कहाँ हो?' उसने उत्तर दिया–'मैं स्वर्गलोक में हूँ।' वहाँ क्या है? मित्र का दूसरा प्रश्न था। 'यहाँ रत्नजडित विमान है, प्रकाश है, आनंद है और मनोरंजन के नए-नए साधन हैं।' यह सुनकर मित्र का मन ललचा गया। वह बोला–'मित्र! कुछ क्षण के लिए मुझे भी वे दृश्य दिखा दो, उस आनंद का अनुभव करा दो। देव मित्र मुसकुराकर बोला–'जिस स्थिति को मैंने मरकर पाया है उसे तू जीते-जी कैसे पा सकेगा?' जहाँ स्वयं के खपने और तपने से तत्त्व मिलता है, वहाँ केवल दर्शक बनकर बैठने से क्या होगा?

कुछ लोग नियमित रूप से ध्यान की साधना करें, फिर भी उनमें रूपांतरण न हो, यह भी संभव है। क्योंकि उनके संस्कार इतने सघन होते हैं जो एक-दो बार के प्रयोग से नहीं टूटते। उन्हें बार-बार प्रयत्न करना होगा और गहरी आस्था के साथ जीवन में धर्म के तत्त्वों का प्रयोग करना होगा। प्रयोग के बिना यहाँ आने का प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता।

स्वभाव-परिवर्तन या जीवन को सुसंस्कारी बनाने का साधन है–ध्यान। कभी-कभी ध्यान-साधना के बिना भी कुछ अच्छी बातें घटित हो जाती हैं। किसी अनुभवी व्यक्ति के दो-चार बोल ही मन को इतना छू लेते हैं कि उनसे अच्छे संस्कार जम जाते हैं।

गुजरात के संत दादा रविशंकर महाराज एक बार गरीबों को गुड़ बाँट रहे थे। गरीब माँ की एक फटेहाल लड़की उधर से गुजरी। दादा ने उसकी ओर उन्मुख होकर कहा–'इधर आ बेटी! तू भी गुड़ लेती जा।' लड़की रुकी और शांत भाव से बोली–'दादा, मेरी माँ ने कहा है कि भगवान ने हमको दो हाथ दिए हैं काम करने के लिए तो मुफ्त में क्यों खाना?' छोटी-सी बच्ची के मुँह से इतनी गहरी बात सुनकर रविशंकर महाराज विस्मित हो गए।

यह प्रसंग इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि जिस व्यक्ति के कुसंस्कार प्रगाढ़ नहीं होते, उस पर किसी भी कथन का अमिट प्रभाव रह सकता है। लड़की की माँ न तो विशेष पढ़ी-लिखी थी और न ही वह कोई विशिष्ट साधिका थी। फिर भी उसके अंतःकरण से निकले हुए शब्द लड़की के संस्कारों को प्रगाढ़ बना गए और उसने मुफ्तखोर नहीं बनने का संकल्प कर लिया।

अब बात यह रही कि शिविर-काल में तो बराबर प्रशिक्षण मिलता रहता है। घर जाने के बाद क्रम कैसे बनेगा? मैं सोचता हूँ कि इस प्रश्न को लेकर चिंतित होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि यहाँ दस दिन तक जो खुराक मिलती है, उससे लंबे समय तक पोषण मिल सकता है। संगरूर के सत्र न्यायाधीश थे–लाला दौलतरामजी। वे वर्ष में एक बार आते और दो-तीन दिन रहकर चले जाते। वे आते ही बोलते–'आचार्यश्री! पिछले वर्ष मैं आपके पास आया और यहाँ से खुराक लेकर गया। वर्ष भर में वह खुराक चुक गई तो अब फिर पहुँच गया हूँ आपके दरबार में। यहाँ से खुराक पाकर जाऊँगा और उसके सहारे अपना काम चलाता रहूँगा।

यह ग्राहक की ग्रहण-शक्ति पर निर्भर करता है कि वह कितना पाथेय ले सकता है। जो साधक सूक्ष्मता से तत्त्व को ग्रहण करेंगे, उन्हें वर्ष भर का संबल मिल जाएग और जिनमें ऐसी क्षमता नहीं है, वे जितनी खुराक ग्रहण कर सकें, करें। जब भी उन्हें अनुभव हो कि हमारा पाथेय चुक गया है, वे पुनः शिविर में साधना करने के लिए तत्पर रहें। इस प्रकार उन्हें आगे-से-आगे प्रेरणा मिलती रहेगी।

### शक्ति-संगोपन की साधना

शक्ति-संवर्धन और शक्ति-संगोपन ये दो बातें हैं। साधना के द्वारा शक्ति का अर्जन और संवर्धन किया जाता है तो उसके संगोपान में भी बहुत बड़ी साधना की अपेक्षा है। प्राचीनकाल में साधना के विशिष्ट प्रयोग से होने वाले शक्ति-संवर्धन को नियंत्रित रखने के लिए साधकों को यह सिखाया जाता था कि वे शक्ति के प्रयोग में विवेक से काम लें। गंभीरचेता व्यक्ति ही प्राप्त शक्ति का संगोपन कर सकता है। जो साधक शक्ति का प्रयोग कर लेता है, उसे कड़ा प्रायश्चित्त स्वीकार करना होता है। अन्यथा साधक विराधक हो जाता है, उसकी साधना विफल हो जाती है, परिश्रमपूर्वक काता हुआ सूत पुनः कपास बन जाता है।

आराधना का अर्थ है–साधना की सफलता। साधना विफल उनकी होती है जो विराधक बनते हैं। विराधना कौन करता है? आगम इस प्रश्न को उत्तरित करते हुए कहते हैं–'मायी कुव्वइ नो अमायी' जो मायावी अर्थात् सकषायी होता है, साधना का प्रदर्शन करने वाला होता है, चमत्कार दिखाने की इचछा रखता है, ऐन्द्रजालिक होता है, वह शक्ति का प्रयोग करता है और ऐसा करके वह अपनी साधना की विराधना करता है। शक्ति के प्रयोग पर जितना नियंत्रण अर्हतों ने किया है, ज्ञानी पुरुषों ने किया है, दूरदर्शितापूर्ण सूझ-बूझ से किया है।

यहाँ एक प्रश्न उठता है कि जहाँ विरोधी व्यक्ति शक्ति का प्रयोग करे, वहाँ अपनी सुरक्षा की दृष्टि से अथवा सामने वाले व्यक्ति पर प्रभाव छोड़ने की दृष्टि से शक्ति का प्रयोग सम्मत है या नहीं? इस प्रश्न के उत्तर में भगवान महावीर के जीवन का एक प्रसंग स्मरणीय है। घटना उस समय की है जब वे तीर्थंकर बन गए थे। उनके प्रतिद्वंद्वी गोशालक ने उनके सामने खड़े दो साधुओं को भस्म कर दिया। उनके पास अपार शक्ति थी, फिर भी उन्होंने साधुओं की सुरक्षा हेतु उसका प्रयोग नहीं किया। क्योंकि वे इस बात को जानते थे कि आज मैं शक्ति का प्रयोग करूँगा तो यह रास्ता सदा के लिए खुला रह जाएगा। ऐसे अवसर पर शक्ति का संगोपन कर मुझे अपने साधक साधु-साध्वियों को एक नई दिशा दिखानी है। वह दिशा यह है कि मुनि आक्रमण तो करे ही नहीं, प्रत्याक्रमण भी न करे। वह अपने बचाव के लिए भी शक्ति का प्रयोग न करे।

(क्रमशः)

# साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(९६)

दी जमाने को सदा अभिनव दिशाएँ
विहग प्राणों के तुम्हारे गीत गाएँ।

समर्पण का ले सहारा तुम चले थे
बीज से विस्तार पाकर तुम फले थे
सुगुरु का साया अमित वात्सल्य पाया
जिंदगी के सफर में नव मोड़ आया
द्वार उन्नति के खुले सहसा तुम्हारे
पूर्णता पाने लगे अरमान सारे
करिश्मा कैशोर्य का कैसे बताएँ।।

पूज्य कालू की मिली करुणा अनाविल
मिल गया मझधार में भी इष्ट साहिल
बन फरिश्ते रोशनी के जगमगाए
तिमिर तट पर चाँद-सूरज उतर आए
बाल मुनियों के बने शिक्षक विलक्षण
सजगता से किया उनका सफल हर क्षण
मुखर हैं कमनीय कीरत की कथाएँ।।

हर कदम उठता हुआ आगे निहारा
रहे देते सदा अबलों को सहारा
शक्तिशाली गण बने सपना तुम्हारा
शक्ति-संवर्धन किया इसको निखारा
लक्ष्य ऊँचा देखते सपने निरंतर
पार करते उलझनों का हर समंदर
खोज लेते शून्य में संभावनाएँ।।

आवरण अज्ञान का तुमने हटाया
सत्य के संधान का हर पथ दिखाया
चित्त चिन्मय बन कर अर्चा तुम्हारी
उजल जाए चेतना की लौ हमारी
प्रभाती गाते रहे जग को जगाने
शांति का पैगाम जन-जन को सुनाने
लिखी तुमने क्रांति की पावन ऋचाएँ।।

(९७)

मौसम है अनुकूल आज तुम
जीभर गीत सुनाते जाओ।
अपने गीतों की गरिमा से
अभिनव रंग रचाते जाओ।।

सत्यशोध की गहन अभीप्सा
पैदा की कितनों के मन में
सृजन चेतना जागृत कर दी
अनायास तुमने जन-जन में
महासूर्य तुम इस धरती के
फैलाओ जग में उजियारा
बदलो मानदंड इस युग के
हर किश्ती को मिले किनारा
गूढ़ पहेली जो जीवन की
तुम उसको सुलझाते जाओ।।

संस्कारों की शुद्ध खाद से
देते हो सबको संपोषण
अनुशासन-वात्सल्य सुधा की
धार बहाते रहे विलक्षण
सफल बागवानी माली की
यह सुंदर उद्यान खिला है
खिलने वाले हर प्रसून को
सौरभ का अवदान मिला है
नए-नए सपने संजोकर
नूतन दृश्य दिखाते जाओ।।

चित्रकार के सम्मुख कितने
बिखरे रेखाचित्र अधूरे
कर में नई तूलिका लेकर
भरो रंग हो जाएँ पूरे
तुम जितना सौंदर्य भरोगे
उतना ही होगा आकर्षण
पंखों को उड़ान दो ऐसी
छू लें नभ को आज इसी क्षण
आध्यात्मिक आलोक बिछा
भीतर का तिमिर हटाते जाओ।।

नापें समंदर की गहराई
कब साहिल पे मिला खजाना
हर मुश्किल आसान बनेगी
रुकें कहीं क्यों खोज बहाना
हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
चढ़ने की उत्कट अभिलाषा
करो शक्ति-संप्रेषण ऐसा
पूरी हो जाए अब आशा
मंजिल खड़ी पुकारे अब तुम
सीधी राह बताते जाओ।।

(क्रमशः)

# संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

## बंध-मोक्षवाद

### मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

**भगवान् प्राह**

**(२५) प्राणिनामुह्यमानानां, जरामरणवेगतः।**
**धर्मो द्वीपं प्रतिष्ठा च, गतिः शरणमुत्तमम्।।**

*जरा और मरण के प्रवाह में बहने वाले जीवों के लिए धर्म द्वीप, प्रतिष्ठा, गति और उत्तम शरण है।*

'वत्थु सभावो धम्मो' वस्तु का स्वभाव–स्वरूप धर्म है। स्वभाव व्यक्ति को कभी नहीं छोड़ता। मनुष्य स्वभाव को विस्मृत कर सकता है, किंतु स्वभाव मनुष्य को नहीं। उसके अतिरिक्त त्राण, शरण, गति और द्वीप क्या हो सकता है? विभाव कभी शरण नहीं बनता। मनुष्य यह जानता हुआ भी स्वभाव की ओर गति नहीं करता। धर्म की शरण में आओ **'धम्मं सरणं गच्छामि' 'धम्मं सरणं पवज्जामि' मामेकं सरणं सरणं व्रज'**–यह उद्घोष समस्त धर्म प्रवर्तकों द्वारा हुआ है। उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव किया है कि धर्म को छोड़कर ही प्राणी अनेक आपदाएँ वरण करता है। शांति का आधार धर्म है, इसलिए यहाँ कहा है कि स्वभाव का अनुसंधान करो।

जरा और मृत्यु के महा प्रवाह में बहते हुए प्राणियों की रक्षा का आधार-स्तंभ यही है। उत्पन्न होना, जीर्ण होना और समाप्त होना–एक भी वस्तु इस नियम से वंचित नहीं है। परिवर्तन का चक्र सब पर चलता है। धर्म अपरिवर्तनीय है, शाश्वतिक है। यही परिवर्तन के चक्रव्यूह से व्यक्ति को मुक्त कर सकता है।

**(२६) दुर्गतौ प्रपतज्जन्तोर्धारणाद् धर्म उच्यते।**
**धर्मेणासौ धृतौ ह्यात्मा, स्वरूपमधिगच्छति।।**

*जो दुर्गति में पड़ते हुए जीव को धारण करता है, वह धर्म कहलाता है। अपने स्वरूप को वही प्राप्त होता है, जिसकी आत्मा धर्म के द्वारा धृत है।*

धर्म आत्म-विकास का साधन है। धर्म वैयक्तिक है; सामूहिक नहीं। समूह व्यक्ति में धर्म-भावना प्रवाहित करता है। इसलिए वह अनुपादेय नहीं होता। लेकिन जब वह व्यक्ति की स्वतंत्र-चेतना का हरण कर लेता है, तब वह पवित्र नहीं रहता। कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने इसलिए कहा था कि 'धर्म को पकड़ो, धर्मों को नहीं। धर्म कभी अहित नहीं करता। धर्मों को पकड़ने पर अहित होता है। धर्मों का यहाँ अर्थ है सांप्रदायिकता। धर्म से वैमनस्य, विरोध, विभेद आदि पैदा नहीं हुए, ये सांप्रदायिकता से बड़े हैं। आज धर्म को मिटाने की अपेक्षा नहीं है। मिटाना है सांप्रदायिकता को। धर्म कभी मिटता नहीं है। वह सदा अमर है। 'अमर रहेगा, धर्म हमारा'–धर्म सनातन है। धर्म की वास्तविकता में विरोध नहीं है, विरोध है उसका गलत प्रयोग करने में।

धर्म की वास्तविकता है–ज्ञान का पूर्ण विकास, श्रद्धा का पूर्ण विकास, स्व (आत्म)-भाव का पूर्ण विकास और आत्मशांति का पूर्ण विकास। अहिंसा, सत्य, कषाय-विजय, इंद्रिय-संयम, मनो-निग्रह, राग-द्वेष-विलय आदि आत्म-विकास के सहायक हैं। इसलिए ये धर्म हैं। किसी भी धर्म का इनके साथ विरोध नहीं है। विरोध का सबसे बड़ा कारण है, हम अपने धर्म की सीमा में घुस जाते हैं। और उसी का चश्मा अपनी आँखों पर लगा लेते हैं। हम उससे भिन्न रंग को देखना नहीं चाहते। यदि अन्य धर्मों का निरीक्षण करें, तो समन्वय के तत्त्व इतने हैं कि उस सीमा को तोड़ने के लिए मजबूर होना पढ़ता है। सांप्रदायिकता का पर्दा अधिक दिनों तक टिका रह नहीं सकता। शब्द-भेद के अतिरिक्त अर्थ का एकता अधिक निकट ले आती है। हम अधिक गहराई में न जाकर विकास की ओर बढ़ें और धर्म के साधनों का अभ्यास करें। **(क्रमशः)**

# अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

### धर्म बोध

**शील धर्म**

**प्रश्न ६** : ब्रह्मचर्य अणुव्रत के कितने अतिचार हैं?

**उत्तर** : ब्रह्मचर्य अणुव्रत के पाँच अतिचार हैं। इनकी सम्यक् अवगति कर इनके आचरण से बचना बहुत अपेक्षित है। वे इस प्रकार हैं–

(१) **इत्वरपरिगृहीतागमन**–थोड़े समय के लिए गृहीत अविवाहित स्त्री को इत्वरपरिगृहीता कहते हैं। वह वास्तव में परदार न होने पर भी अणुव्रती उसे परदार समझे और उसके साथ मैथुन सेवन न करें।

(२) **अपरिगृहीतागमन**–किसी के द्वारा अगृहीत वेश्या आदि परदार नहीं, पर अणुव्रती उसे परदार समझे और उसके साथ मैथुन सेवन न करे।

(३) **अनंगक्रीड़ा**–आलिंगनादि क्रीड़ा अथवा अप्राकृतिक क्रीड़ा को अनंगक्रीड़ा कहते हैं। अणुव्रती इन्हें भी मैथुन समझकर उसका परिहार करे।

(४) **परविवाहकरण**–अपनी संतान अथवा परिवार के व्यक्तियों के अतिरिक्त परसंतति का विवाह न करे।

(५) **कामभोगतीव्राभिलाषा**–काम-भोग की तीव्र अभिलाषा न रखे अथवा काम-भोग का तीव्र परिणाम से सेवन न करे। **(क्रमशः)**

# उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण**

### उपाध्याय यशोविजयजी

वे विद्या के साथ पनपने वाले अहं से नहीं बच सके। अपना प्रभाव बताने के लिए व्याख्यान के समय सामने रखी जाने वाली स्थापनाजी पर चार ध्वजाएँ लगा लीं। लोगों को ये बताने के लिए कि मेरा यश चारों ओर फैला हुआ है। लोगों को अटपटा लगा। पर कहे कौन? अंत में एक वृद्धा ने समझाने की दृष्टि से उन्हें पूछा–गुरुवर! आप बहुत विद्वान् हैं या गौतम स्वामी? उन्होंने कहा–गौतम स्वामी! बुढ़िया का प्रश्न था–तब गौतम स्वामी अपने सामने कितनी ध्वजाएँ लगाते थे? यशोविजयजी की आँखें खुल गई। ध्वजाओं को तोड़कर फेंकते हुए बोले–ओछे को ही अभिमान हुआ करता है। वे तो समुद्र के समान गंभीर थे।

सं० १७४० में पाटण में चौमासा किया। वहाँ 'संतोष बाई' की प्रेरणा से अध्यात्मयोगी श्री आनंदघनजी से मिले। उनके सामने दशवैकालिक का प्रथम पद–'धम्मोमंगलमुक्किट्ठं' के पचास अर्थ करके अपनी विद्वत्ता का पूरा-पूरा प्रदर्शन करके फूले नहीं समा रहे थे।

आनंदघनजी ने इनके किए गए पचास अर्थों के अतिरिक्त अनेक विचित्र एवं चमत्कारी अर्थ करके इनके अहंकार को चूर-चूर किया। शिक्षित हृदय अहं दूर हो जाने के बाद नम्र भी बहुत होता है। अब उनसे अत्याग्रह करके सारा दशवैकालिक सूत्र पढ़ा। उन्होंने भी दशवैकालिक में ही सारा भगवती सूत्र पढ़ा दिया। वस्तुतः ये उसे ही पढ़ना चाहते थे।

### लोंकाशाह

लोंकाशाह सिरोही राज्यांतर्गत 'अरहटवाडा' ग्राम के निवासी थे। उनके पिता का नाम हेमाभाई था। वे अहमदाबाद में रहने लग गए। अहमदाबाद में उस समय यति वर्ग का प्रभुत्व और वर्चस्व था। लोंकाशाह के अक्षर सुंदर होने से वे आगमों की प्रतिलिपि करते थे। प्रतिलिपिकार के साथ-साथ गंभीर चिंतक, जिज्ञासु और धर्मतत्त्व के समीक्षक भी थे। प्रतिलिपि करते समय आगमों के अध्ययन के प्रसंग पर उन्हें अनुभव हुआ कि सिद्धांत और साध्वाचार में गहरा अंतर है। पर्याप्त चिंतन-मनन पूर्वक निर्भय होकर एक क्रांति का उद्घोष किया। वह समयोचित उद्घोष कइयों को बहुत अच्छा लगा। अनेक लोग लोंकाशाह के अनुगामी बने। कोट्यधीश सेठ लखमसीभाई को अपनी ओर आकृष्ट कर लेना, लोंकाशाह की बहुत बड़ी सफलता मानी जाने लगी। एक बार कई संघ तीर्थयात्रार्थ जा रहे थे। वर्षा के कारण उन सबको वहाँ रुकना पड़ा जहाँ लोंकाशाह थे। उनके उपदेश से उनमें अनेक सुलभबोधि बने। यहाँ तक कि पैंतालीस व्यक्तियों ने लोंकशाह के सिद्धांतों के अनुरूप श्रमण-दीक्षा ली। चैत्यों में रहना छोड़ दिया। यह वि०सं० १५३१ का समय था। वि०सं० १५४१ में लोंकाशाह दिवंगत हो गए।

उस समय लोंकागच्छ का शैशव काल ही था। गच्छ का संगठन सुदृढ़ न होने से कुछ समय बाद छिन्न-भिन्न होने लगा। तब लवजी ऋषि, धर्मसिंहजी, धर्मदासजी आदि ने क्रियोद्धार किया।

### आचार्य धर्मदासजी

'धर्मदासजी' अहमदाबाद जिलांतर्गत सरखेज गाँव के रहने वाले थे। जाति के भावसार थे। पिता का नाम जीवनदास था। घर का वातावरण धर्ममय था–यह पुत्र का धर्मदास नाम ही सूचित करता है। धर्मदासजी ने प्रारंभ में यति तेजसिंहजी के पास धार्मिक शिक्षा पाई थी। श्रावक कल्याणजी के पास दो वर्ष तक पोतियाबंध संप्रदाय की साधना भी की। लवजी ऋषि तथा धर्मसिंघजी से भी समय-समय पर धर्मचर्चाएँ कीं। पर आत्म-संतोष नहीं हुआ। अंत में माता-पिता की आज्ञा लेकर वि०सं० १७०० में अदम्य साहस से सात साथियों के साथ जैन दीक्षा ग्रहण की।

**(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 - 16 अक्टूबर, 2022



✦ *व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो और व्यवस्था भी अनुकूल हो तो दोनों के योग से 'नैतिकता की सरिता, महक उठे मानवता' की बात उजागर हो सकती है।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करने का पर्व है पर्युषण महापर्व

**विजयनगर, बैंगलोर।**

पर्युषण महापर्व के प्रथम दिन की शुरुआत तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में हुई। सर्वप्रथम महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण का संगान हुआ। खाद्य संयम दिवस के उपलक्ष्य में मुनि प्रियांशु कमार जी ने भोजन को किस तरह से हमें अपने जीवनचर्या में उपयोग करना चाहिए। हित आहार मित आहार के बारे में जानकारी प्रदान की। इसी तरह पर्वों में श्रेष्ठ पर्व पर्युषण महापर्व है। सातों दिन हमें अपने मन की सफाई करनी है और अपनी आत्मा को पवित्र बनाने का यह पर्व मनाया जाता है। मुनिश्री ने सात दिन के नियमों के बारे में विशेष जागरूकता के साथ सभी श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित किया।

**स्वाध्याय दिवस :** मुनि रश्मि कुमार जी ने स्वाध्याय दिवस के उपलक्ष्य में मधुर गीतिका के माध्यम से कहा कि मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए उत्तम उपाय स्वाध्याय है। मुनिश्री ने एक प्रश्न के संदर्भ में बताया कि स्वाध्याय से जीव क्या प्राप्त करता है? जवाब में बताया कि जीव स्वाध्याय से ज्ञानवर्णीय कर्म का क्षीण कर सकते हैं।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने स्वाध्याय कैसे करना चाहिए उस विषय पर धर्मसभा को स्वाध्याय के बारे में समझाया। उन्होंने कहा कि बिना ज्ञान के दान देना या किसी भी शुभ कार्य को करना बिना ज्ञान के बेकार है, और ज्ञान स्वाध्याय करने से आता है तथा ज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसलिए हमें ज्ञानवर्धक साहित्य का पठन करना चाहिए।

**अभिनव सामायिक :** अभिनव सामायिक दिवस की शुरुआत तेयुप विजयनगर की भजन मंडली विजय स्वर संगम के द्वारा मंगलाचरण से की गई।

मुनि रश्मि कुमार जी ने स्वाध्याय एवं ध्यान का प्रयोग करवाते हुए सामायिक के महत्त्व को समझाते हुए बताया कि सामायिक कैसे मुक्ति का मार्ग है। पूर्ण एकाग्रतापूर्वक अगर दिन की एक सामायिक की जाए तो मनुष्य का भव सुधर जाता है और वह अगले जन्म में देव गति को प्राप्त करता है। संयम की साधना है सामायिक। मुनि प्रियांशु कुमारी जी ने भी कहानी के माध्यम से सामायिक के महत्त्व को समझाया।

**वाणी संयम दिवस :** मुनि रश्मि कुमार जी ने वाणी संयम दिवस पर बताया कि वाणी के संयम से मनुष्य को हर जगह मान सम्मान की प्राप्ति होती है। हम अपनी वाणी पर संयम रखकर बड़े से बड़े शत्रु को भी मित्र बना सकते हैं। अपने विवेक से वाणी का मधुर प्रयोग करना चाहिए।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहानी के माध्यम से वाणी संयम की उपयोगिता के बारे में समझाया।

कार्यक्रम की शुरुआत तूफान मांडोत एवं सभा सदस्यों के मंगलाचरण गीतिका के माध्यम से हुई। इस अवसर पर जैन रिलिफ फाउंडेशन के सदस्य एवं कार्यकर्ताओं की तरफ से जेआरएफ कार्ड की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का संचालन सभा के सहमंत्री लाभेश कांसवा ने किया।

**अणुव्रत चेतना दिवस :** अणुव्रत चेतना दिवस के उपलक्ष्य में गीतिका के पद्य से अणुव्रत के बारे में बताया। अणुव्रत नाम को जागृत एवं जन्मदाता तेरापंथ के नवम आचार्य गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ही थे, जिन्होंने इस अणुव्रत नाम की क्रांति पूरे विश्व में जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। अणुव्रत का मतलब आपके अंदर अथाह छिपी हुई कमियों, गलतियों को दूर कर अच्छाइयों की तरफ आपको वशीकृत करके आपकी रक्षा करने का तरीका ही अणुव्रत कहलाता है। उक्त विचार मुनि रश्मि कुमार जी ने व्यक्त किए।

कार्यक्रम की शुरुआत गांधीनगर, बैंगलोर से समागत प्रेक्षा संगीत सुधा की टीम के मंगलाचरण से हुई।

पंचरंगी तप के कार्यक्रम में तपस्या करने वाले भाई-बहनों ने अपने नाम लिखाए जो मुनिश्री की प्रेरणा से ही संभव हो सका।

**जप दिवस :** मुनि रश्मि कुमार जी ने गीतिका के माध्यम से जाप करने की महत्त्वता पर रोशनी डाली। जप एक आलंबन सूत्र है। आत्मकल्याण का सूत्र है। जप दिवस के उपलक्ष्य में मुनिश्री ने धर्मसभा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को तकरीबन ३० मिनट तक 'सर्वकार्य सिद्धि' मंत्र जाप का अनुष्ठान करवाया।

जप दिवस के उपलक्ष्य में मुनि प्रियांशु कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र की महिमा का वर्णन करते हुए बताया कि नमस्कार महामंत्र सभी मंत्रों में एक ऐसा मंत्र है जिसका जाप निरंतर करते रहने से हम अपने अरिहंत देव, सिद्ध देव, हमारे धर्माचार्यों को और लोक के सभी साधु-साध्वियों की स्तुति करते हुए उनका स्मरण कर उनको नमस्कार कर सकते हैं इस एक ही मंत्र में इतनी विशिष्टता हैं तथा इसको रोजाना हमें प्रातः इसका जाप करते रहना चाहिए।

कार्यक्रम की शुरुआत तेयुप राजराजेश्वरी की भजन मंडली तुलसी संगीत सुधा द्वारा मंगलाचरण से हुई। अर्हम् मित्र मंडल के अध्यक्ष बहादुर सेठिया ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

**ध्यान दिवस :** मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में सातवाँ दिवस ध्यान दिवस पर प्रेक्षा फाउंडेशन की टीम के द्वारा मंगलाचरण गीतिका की प्रस्तुति हुई।

मुनि रश्मि कुमार जी ने गीतिका के माध्यम से बताया कि तपस्या एक अग्नि के समान है जो हमारे में क्रोध को बढ़ाती है, लेकिन ध्यान पानी की ठंडी बूँद की तरह है जो क्रोध की अग्नि को शांत करता है। पहले ज्ञान, फिर ध्यान उसके बाद चर्या आनी चाहिए।

ध्यान साधना के विषय पर बताते हुए मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहा कि गुरु की कृपा से ध्यान लगाया जा सकता है। मुनिश्री ने कहा कि मोक्ष के दो मार्ग हैं—पहला संकल्प शक्ति और दूसरा निर्जरा। ध्यान योग करने के लिए मन, वचन, काया को जागृत करने के लिए ध्यान लगाना आवश्यक होता है।

सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने सभी तपस्वी भाई-बहनों की तप की अनुमोदना की। तेयुप के उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने ध्यान का प्रयोग करवाया।

**संवत्सरी महापर्व :** मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का आखिरी दिन संवत्सरी पर्व क्या है और इसकी क्या महत्त्वता है उसके बारे में जानकारी दी। मुनिश्री ने ध्यान और जप का प्रयोग कराते हुए सुमधुर भजनों एवं मंगल सूत्रों का वाचन कर जैन धर्म की विशेषताओं का वर्णन किया।

मुनि रश्मि कुमार जी ने गीतिका के माध्यम से कहा कि आदमी को मन के अंदर गाँठ नहीं रखनी चाहिए, नहीं तो आदमी का सम्यक्त्व चला जाता है। भगवान महावीर ने कहा कि पर्युषण का मतलब है अपने आपके समीप आना।

मुनिश्री ने इस अवसर पर कालचक्र का वाचन करते हुए बताया कि जनगणना के अनुसार संसार में पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा आरे के बारे में बताया और वर्तमान में यह पाँचवाँ आरा चल रहा है, इसका विस्तार से वर्णन किया।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी ने दस हजार प्रकार के धर्मों के बारे में बताया है, जिसमें सबसे मुख्य और अहम् धर्म है—क्षमा। क्षमा माँगना और क्षमा प्रदान करना क्षमा कब और कैसे माँगनी चाहिए उसके पहले हमें संवत्सरी पर्व के बारे में जानना होगा, उन्होंने एक छोटे से उदाहरण के माध्यम से समझाया।

कार्यक्रम की शुरुआत सभा, तेयुप, महिला मंडल के सदस्यों के द्वारा सामूहिक मंगलाचरण से हुई।

**क्षमापना दिवस :** मुनि रश्मि कुमार जी, मुनि प्रियांशु कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में सामूहिक खमतखामणा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने तपस्या की उनकी साता पूछी।

इस अवसर पर क्षमायाचना की ओर इस पर्युषण पर्व के दौरान जिन-जिन भाई-बहनों का सहयोग मिला। सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर तेयुप के दिनेश पोखरणा, तेयुप अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, महिला मंडल उपाध्यक्ष महिमा पटावरी, महिला मंडल से बरखा पुगलिया, अर्हम् मित्र मंडल के मंत्री विनोद पारख, मुनि प्रियांशु कुमार जी के संसारपक्षीय माता कांता नौलखा ने भी अपनी भावनाओं के साथ सभी से क्षमायाचना की। मुनि रश्मि कुमार जी ने अपने उद्बोधन में पूर्व सभी को भाव प्रतिपूर्वक गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी, साध्वीप्रमुखाश्री, मुख्य मुनि महावीर कुमारजी, साध्वीवर्याजी एवं समस्त साध्वीवृंद, मुनिवृंद से सामूहिक खमतखामणा किया।

मैत्री पर्व क्षमा का पर्व है मन में किसी प्रकार का वैर न रखने का पर्व है और यह कार्य बड़े ही सादगीपूर्वक अपने सहवर्ती मुनि, मुनि प्रियांश कुमार जी से क्षमा करने लगे मुनिश्री ने इस पर्युषण काल के दौरान विशेष रूप से प्राप्त सेवाओं के लिए ललित सेठिया, प्रकाश कोचर और अमृत दलाल की भी प्रशंसा की।

## सामूहिक पचरंगी तप अभिनंदन

**सिकंदराबाद।**

तेरापंथ भवन में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में सामूहिक पचरंगी तप अभिनंदन कार्यक्रम तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया।

राजेंद्र बोथरा ने बताया कि साध्वीश्री जी की प्रेरणा से लगभग ८० भाई-बहनों ने एक साथ इस तपोयज्ञ में भाग लिया। साध्वीश्री जी ने तप का महत्त्व बताते हुए कहा कि तप आधि, व्याधि को दूर कर समाधि की यात्रा करवाता है। तप से शारीरिक बीमारियाँ तो दूर होती ही हैं, साथ ही साथ आत्मा पर लगे कर्मरूपी कीटाणुओं को भी क्षणभर में दूर कर देता है। तप कर्म निर्जरा का सर्वोत्तम साधन है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज महायज्ञ में जिन-जिन भाई-बहनों ने अपनी आहुति दी है वह सभी साधुवाद के पात्र हैं। आप सबने कर्म निर्जरा के साथ-साथ अपने सुकृत के खजाने को भी खूब भरा है। सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। सभा परिवार ने सभी तपस्वियों को सम्मानित किया।

## सामूहिक ज्ञानशाला का आयोजन

**कोलकाता।**

सामूहिक ज्ञानशाला का आयोजन की शुरुआत हिंदमोटर सभा के तत्त्वावधान में आंचलिक संयोजिका व क्षेत्रीय संयोजिका के प्रयास से हुआ।

कार्यकारिणी सदस्य मालचंद भंसाली व सह-संयोजक हिंदमोटर, रिसड़ा, लिलुआ, बेलूर, बाली के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष, मंत्री, स्थानीय सभा संयोजक, मुख्य प्रशिक्षिकाएँ व अन्य सभी प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति में लगभग ४० ज्ञानार्थियों ने ज्ञान अर्जन किया।

सामूहिक ज्ञानशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात बच्चों को विधिपूर्वक गुरु वंदना, त्रिपदी वंदना, लयबद्ध प्रार्थना व प्रतिज्ञा करवाई गई। लिलुआ से सफलता की प्रेरणादायक कहानी से बच्चों को संस्कार ज्ञान दिया गया। ज्ञानार्थियों द्वारा अच्छी प्रस्तुति दी गई। सभी बच्चों ने कविता प्रतियोगिता में भाग लिया। हिंदमोटर के बच्चों ने कंठस्थ ज्ञान में २५ बोल की प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला कक्षा के पश्चात हिंद मोटर सभा के अध्यक्ष मनोज कुंडलिया द्वारा सभी बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

रिसड़ा, लिलुआ, बेलूर-बाली सभा की उपस्थिति और ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक, सह-संयोजक सभी का सहयोग रहा। सभी मुख्य प्रशिक्षिकाओं व अन्य प्रशिक्षिकाओं का साधुवाद व धन्यवाद।

## नई ज्ञानशाला शुभारंभ

**टॉलीगंज (गरिया)।**

गुरुदेव की असीम कृपा एवं ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अथक परिश्रम और प्रेरणा से कोलकाता के टॉलीगंज सभा के अंतर्गत एक नई ज्ञानशाला का शुभारंभ गरिया में हुआ। कोलकाता में अभी ज्ञानशालाओं की संख्या ४७ हो गई है। सभी ज्ञानशाला गतिमान हैं, प्रगति पथ पर अग्रसर हैं। टॉलीगंज की सभा के अध्यक्ष अशोक पारख की उपस्थिति एवं अन्य सभी सदस्यों और ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक, सह-संयोजक, क्षेत्रीय संयोजक, कार्यकर्ता भाई-बहन सभी की उपस्थिति में क्षमायाचना के कार्यक्रम के अवसर पर नई ज्ञानशाला के आरंभ का यह कार्य हुआ।

कोलकाता की सभी सभाओं का अच्छा सहयोग सदैव मिलता रहा है और आशा करते हैं इसी सहयोग, गुरुकृपा व प्रकोष्ठ की प्रेरणा से ज्ञानशाला प्रगति शिखर पर अग्रसर होती रहे।

# पर्युषण महापर्व है जीवन में स्वस्थ और आत्मस्थ होने का दुर्लभ अवसर

**पाली।**

तेरापंथ भवन में पर्युषण महापर्व का शुभारंभ करते हुए मुनि तत्त्वरुचि 'तरुण' ने कहा कि पर्युषण महापर्व जीवन में स्वस्थ और आत्मस्थ होने का दुर्लभ अवसर है। इसमें व्यक्ति क्रोध, मान, भाषा, लाभ, राग-द्वेष, मोह, आसक्ति, निंदा, चुगली, घृणा आदि अशुभ क्रियाओं से मुक्त होने की साधना की जाती है। इस अवसर पर सैकड़ों की संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस पर मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि साधना की पहली शर्त है—खाद्य संयम। इसके बिना धर्म की साधना संभव नहीं। उन्होंने कहा कि भौतिकवादी युग में भोगवाद का बोलबाला अधिक है। हमारा जितना ध्यान खाने-पीने पर है, उतना धर्मध्यान पर नहीं है। उन्होंने बताया कि आज खाने-पीने का असंयम अस्वस्थता का बड़ा कारण है। स्वस्थ रहने के लिए खाने का लंघन अथवा खाने का संयम जरूरी है। मुनिश्री ने कहा कि शरीर में ताकत गरिष्ठ खाने से नही बल्कि पचाने से आती है। इस अवसर पर सैकड़ों लोगों ने उपवास, एकासन, खाद्य संयम आदि के संकल्प लिए।

पर्युषण महापर्व के दूसरे दिन स्वाध्याय दिवस पर मुनि तत्त्वरुचि जी ने कहा कि स्व को जानना ही सबसे बड़ा स्वाध्याय है। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कहाँ जाना है? इन सबका उत्तर स्वाध्याय से प्राप्त होता है। मुनिश्री ने कहा कि शास्त्र के अनुसार स्वाध्याय के पाँच प्रकार हैं—वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा, सत्साहित्य का अध्ययन करना, तत्त्व के बारे में पूछना, प्राप्त ज्ञान को दोहराना, धर्म चिंतन-मंथन करना, उपदेश देना आदि क्रियाएँ स्वाध्याय कहलाती हैं। मुनिश्री ने आगे कहा कि स्वाध्याय के समान दूसरा नहीं है। स्वाध्याय सर्वोत्तम तप है।

पर्युषण पर्व के तीसरे दिन तेरापंथ युवक परिषद के बैनर तले 'अभिनव सामायिक' की साधन करवाई गई। जिसमें लगभग ५०० श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

सामायिक दिवस विषय पर मुनि तत्त्वरुचि जी ने कहा कि जीवन सुख-शांति, संतुलन व समाधी पाने की साधना है—सामायिक। असंतुलन आज की सबसे बड़ी समस्या है। न जीवन में संतुलन है, न व्यवस्था में। चारों ओर असंतुलन के कारण समस्या विकट होती जा रही है। मुनिश्री ने कहा कि समता को साधक लेने से सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं।

मुनि संभवकुमार जी ने कहा कि अच्छा जीवन जीने का सूत्र है—हम हर स्थिति में शांत रहें। शांत रहने के लिए जीवन में समता का अभ्यास जरूरी है। सामायिक समता की साधना है। इससे व्यक्ति सुख-दुःख में, मान-अपमान में, निंदा-प्रशंसा में, लाभ-अलाभ में और जीवन-मरण में सम रह सकता है। उन्होंने कहा कि सामायिक धर्म है। यह केवल धर्म स्थानों तक सीमित न रहे। आचरण और व्यवहार में आना चाहिए। इससे आत्मकल्याण और परकल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है।

पर्युषण महापर्व के चौथे दिन 'वाणी संयम दिवस' के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए मुनि तत्त्वरुचि जी ने कहा कि 'पहले तोलो, फिर बोलो' ताकि कोई समस्या पैदा न हो। वाणी समस्या भी है तो समाधान भी है। सोच-समझकर बोलना समाधान है। बिना सोचे समझे बोलना समस्या पैदा कर सकता है।

मुनिश्री ने कहा कि वाणी हमारे व्यक्तित्व का दर्पण है। इससे व्यक्ति की पहचान होती है। वह उच्च कुल का है या नीच कुल का है। अतः वाणी में हम अच्छे और ऊँचे शब्दों का प्रयोग करें। नीची भाषा निम्नता की परिचायक है। मुनिश्री ने कहा कि हमारी वाणी इष्ट, मिष्ट और शीष्ट हो। वह स्व और पर-कल्याणी है।

मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि वाणी विकास का आधार है। वाणी से ही संबंधों का विस्तार होता है। समाज का भी निर्माण होता है। पशुओं में विकास नहीं होने का कारण है—स्पष्ट वाणी का अभाव। उन्होंने कहा कि वाणी से कल्याण और नुकसान दोनों संभव है। वाणी अमृत भी है, जहर भी है। विवेक रहित वाणी का प्रयोग अभिशाप है। विवक सहित वाणी का व्यवहार वरदान है।

पर्युषण महापर्व के पाँचवें दिन 'अणुव्रत चेतना दिवस' पर मुनि तत्त्वरुचि जी ने कहा कि अणुव्रत मानवीय अच्छाइयों का गुलदस्ता है। जिसे स्वीकार करने से जीवन सुरभित और सुशोभित होता है। उन्होंने कहा कि अणुव्रत में वे सारी अच्छाइयाँ समाहित हैं जो एक अच्छे सच्चे इंसान के लिए जरूरी हैं। मुनिश्री ने कहा कि भगवान महावीर अणुव्रत के प्रवर्तक थे। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत को जन-जन तक फैलाने के लिए एक आंदोलन का रूप दिया। इसलिए आचार्य तुलसी अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक कहलाए। उन्होंने कहा कि वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं का सटीक समाधान है—अणुव्रत। इसीलिए अणुव्रत आज अधिक प्रासंगिक है।

मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत आत्म विकास और जीवन सुधार का सच्चा मार्ग है। भगवान महावीर ने साधु-साध्वियों के लिए महाव्रत और श्रावक-श्राविकाओं के लिए अणुव्रत का विधान किया है।

पर्युषण पर्व के छठे दिन 'जप दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में मुनि तत्त्वरुचि जी ने कह कि जन्म-मरण और पाप से मुक्ति दिलाता है—जप। जप भक्ति का मार्ग है। भक्ति से शक्ति का जागरण होता है। जप में मंत्र का नाद होता है। नाद से जीवन बदलता है। अर्थात् जप बदलाव की प्रक्रिया भी है। उन्होंने कहा कि शक्ति सपन्न बनने और स्वस्थ होने का अमोघ साधन है मंत्र जप।

मुनिश्री ने मंत्र जप के लाभ की चर्चा करते हुए कहा कि मन की चंचलता कम होती है। निर्बल मन सबल बनता है। एकाग्रता का भी विकास होता है। उन्होंने बहाया कि मंत्र साधना आसुरी शक्तियों पर विजय पाने और दैविक शक्तियों को जगाने का अहम प्रयोग है। मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि निर्भयता, निरामयता और निर्विकारता के विकास का मार्ग है—जप।

पर्युषण पर्व के सातवें दिन 'ध्यान दिवस' पर मुनि तत्त्वरुचि जी ने कहा कि ध्यान तनावमुक्ति और सुख-शांति की प्राप्ति का साधन है। उन्होंने कहा कि ध्यान के बिना अंतर्दृष्टि का जागरण नहीं होता। अंतर्दृष्टि के बिना प्रज्ञा का-अवतरण नहीं होता। धर्म की समझ और उसकी समीक्षा प्रज्ञा के द्वारा पैदा होती है। मुनिश्री ने कहा कि ध्यान अतीन्द्रिय चेतना के जागरण का भी माध्यम है। ध्यान धर्म का प्रयोग है। इसके द्वारा धर्म की असलियत का अनुभव कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इच्छित परिणाम के लिए ध्यान की प्रक्रिया का सम्यक् ज्ञान अपेक्षित है।

पर्युषण पर्व के अंतिम दिन संवत्सरी दिवस पर मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ने कहा कि संवत्सरी महापर्व आत्मा की आराधना का शिखर दिन है। यह जैन धर्म का प्रमुख आध्यात्मिक पर्व है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को अंतर्मुखी बनकर आत्मदर्शन करने का प्रयास करना है। स्वयं के द्वारा स्वयं की खोज करना ही मुख्य ध्येय होता है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास एवं पौषध करके आत्माराधना की। मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि वैर विरोध आत्म विकास के बाधक हैं। साधक सब जीवों के प्रति मैत्री का भाव रखें। संयम, समता, सहनशीलता, क्षमा, आत्मोत्थान का मार्ग है।

पर्युषण पर्व के समापन पर आयोजित मैत्री पर्व पर मुनि तत्त्वरुचि जी ने कहा कि क्षमा अमृत है और क्रोध, वैर, विरोध, कटुता जहर है। जिस व्यक्ति के पास क्षमा का अमृत होता है वह क्रोध व कटूता रूपी जहर को धोकर अर्थात् साफ कर स्वयं अमृत बन जाता है। मैत्री दिवस के इस अवसर पर संतों ने एवं श्रावक-श्राविकाओं ने परस्पर खमतखामणा की। मुनिश्री ने मैत्री पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि समुद्र में चाहे जितनी नदियाँ मिल जाएँ सभी को अपने में समाहित कर लेता है मनुष्य समुद्र की तरह गहरा-गंभीर बनें। परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी आएँ, जीवन में कभी संतुलन नहीं खोना चाहिए।

# मासखमण तप अभिनंदन के कार्यक्रम

## किशनगंज

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में १८ वर्ष की उम्र में मासखमण तप करने वाले किशोर यश लोढ़ा का तप अभिनंदन समारोह के रूप में मनाया गया। समारोह का शुभारंभ ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं के मंगल गीत से हुआ।

इस अवसर पर साध्वी संगीतश्री जी ने कहा कि यश ने मासखमण का तप किया है। इसका मनोबल देखने लायक है। तप के साथ-साथ इसके जीवन में समता बहुत थी। भगवान महावीर ने तप को मोक्ष का मार्ग बताया है। तपस्या आत्म-जागरण की महान साधना है। तपस्या आत्मशुद्धि का महान उपक्रम है। हम यश के मासखमण की तपस्या की अनुमोदना करते हैं। यश गुरुदेव महाश्रमण जी से शक्ति पाकर आगे बढ़ा और इसने मासखमण की बड़ी तपस्या को पूरा किया। इसकी इस तपस्या को पूरा करने में इसके परिवार का भरपूर सहयोग रहा।

साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी मुदिताश्री जी ने तपस्वी के तप की अनुमोदना की। सभा के मंत्री अजय बैद ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन किया। अनुमोदना में सभा के अध्यक्ष विमल दफ्तरी, महासभा के संरक्षक राजकरण दफ्तरी, नेपाल-बिहार के उपाध्यक्ष चैनरूप दुगड़, महिला मंडल की मंत्री रचना बोथरा, तेयुप के अध्यक्ष अमित दफ्तरी, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संजय बैद, दिगंबर जैन समाज के विशिष्ट श्रावक तिलोकचंद जैन, मारवाड़ी युवा मंच से दिनेश पारीक, यश के पिता महेंद्र लोढ़ा, बेरागण बहन नेहा लोढ़ा, प्रभा गोलछा, कमल कोठारी, प्रकाश बोथरा, राजू कोठारी, रितु लोढ़ा, इस्लामपुर से राजीव डागा, शर्मिला बैद, साधु मार्गी जैन संघ की बहनें आदि सभी ने तपस्वी यश के तप की अनुमोदना में गीत और अपने वक्तव्य के माध्यम से अनुमोदना की। संचालन साध्वी कमलविभा जी ने किया।

## नोखा

कहते हैं आसोज में मोती निपजते हैं। अनिल ने हिम्मत करके दृढ़ मनोबल से मासखमण तप किया। यह विशेष आस्था का परिचायक है। भौतिक सुविधा, संपदा, धन होना अलग बात है। तप करने से आध्यात्मिक संपदा बढ़ती है, इसने मनोयोग से तप करके कीर्तिमान स्थापित किया है। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने तपाभिनंदन समारोह में व्यक्त किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए युवा तहसीलदार नरेंद्र बुढ़ानिया ने जैन धर्म के तप को महान बताया। साधु-साध्वियों के जीवन को उज्ज्वल चंद्रमा सम् शीतलता प्रदान करने वाला बताया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का मंगल संदेश का वाचन साध्वी समताश्री जी ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन इंद्रचंद बैद ने किया।

सभा अध्यक्ष निर्मल भूरा, उपाध्यक्ष इंद्रचंद बैद, मंत्री लाभचंद छाजेड़, भुवनेश्वर से पधारे सुभाष भूरा, सरोज मरोठी, सूरत से पहुँचे सतीश-मधु भूरा, भ्राता सुशील भूरा, दिलीप बैद, उर्मिला देवी, विशाल करण भूरा ने तपस्वी अनिल को तप की बधाई देते हुए तपाभिनंदन भावाभिव्यक्ति व्यक्त की।

तहसीलदार नरेंद्र बुढ़ानिया का साहित्य द्वारा सम्मान सभा के पदाधिकारियों ने किया। महिला मंडल अध्यक्षा मंजु बैद, तेयुप अध्यक्ष गजेंद्र पारख, किशोर मंडल संयोजक प्रेम चोरड़िया, रितिक बुच्चा, सुरेश बोथरा, भूरा परिवार की बहनें, तेममं सभी ने तपस्या करना दुर्लभ व गुरुकृपा बताया। अभिनंदन भाव रखे।

साध्वी प्रभातप्रभा जी, साध्वी कुसुमप्रभा जी, साध्वी पुलकितयशा जी ने तप गीत का संगान किया। तपस्वी अनिल ने भी आस्था भरी भावना, गुरुकृपा बताया। तपस्वी अनिल भूरा को तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप द्वारा मोमेंटो, अभिनंदन पत्र, साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

मूलचंद चोरड़िया, हरखचंद छाजेड़, तोलाराम धीया आदि ने साहित्य भेंट किया। संचालन सभा मंत्री लाभचंद छाजेड़ ने किया। दिल्ली से समागत विजयराज सुराणा ने 'अणुव्रत' विशेषांक साध्वीश्री जी को भेंट किया तथा भावना अभिव्यक्त की।

# नि:शुल्क बोन मिनरल डेंसिटी कैंप

**राजाजीनगर।**

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में नि:शुल्क बोन मिनरल डेंसिटी कैंप का आयोजन किया गया। ४० वर्ष की आयु से ऊपर के पुरुष एवं महिलाओं की हड्डियों की जाँच की गई। हड्डी विशेषज्ञ ऑर्थोपेडिक डॉ० शशि किरण द्वारा सभी लाभार्थियों की जाँच कर उचित परामर्श दिया गया।

इस कैंप में कुल ७२ लाभार्थियों ने लाभ लिया। एटीडीसी स्टॉफ ज्योति, दिव्या एवं पवन का पूर्ण सहयोग रहा। तेयुप के अध्यक्ष अरविंद गन्ना, निवर्तमान अध्यक्ष मनोज मेहता सहित अनेक सदस्यों ने अपनी सेवाएँ प्रदान की।

✦ *कर्म निर्जरा के लिए की गई तपस्या विशुद्धतम है।*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# साध्वी रतनश्री जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

## उपशम की साधिका साध्वी रतनश्री 'लाडनूं'

● **शासनश्री साध्वी रमावती** ●

तेरापंथ धर्मसंघ हीरों की खान है। आचार्य तुलसी हीरों के पारखी थे। शासनश्री साध्वी रतनश्री जी (लाडनूं) के विक्रम संवत् २००७ में पंजाब के संगरूर क्षेत्र में आचार्य तुलसी के मुखारबिंद से संयम रत्न प्राप्त किया। उस समय बाल दीक्षा का जोर शोर से विरोध हुआ। पत्थर भी बरसाए, मुमुक्षु रत्न के ललाट पर पत्थर की चोट लगी, आज तक उसका निशान था। उस समय आचार्यश्री तुलसी ने कहा कि तुम्हारा तीसरा नेत्र खुल गया है। मुमुक्षु रत्न का भाषण हुआ कि विरोध भी शांत हो गया।

साध्वी रतनश्री जी की आचार निष्ठा, संयम निष्ठा और संघ निष्ठा बेजोड़ थी। वे संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित थे। आपने संयम स्वीकार करते ही लबभग २५ वर्षों तक सुबह का समय ध्यान, योग, प्राणायाम आदि में लगाते। प्रतिदिन ५०० गाथाओं का स्वाध्याय करते। अंतिम समय तक आप चोबीसी का स्वाध्याय करते रहे।

आगम की वाणी है—'समयं गोयम मा पमायए' इसी पंक्ति को ध्यान में रखते हुए वर्तमान में २५ माला प्रतिदिन 'भिक्खु स्याम' की फेरते। जब वेदना होती उस समय अनुष्ठान प्रारंभ कर देते। वेदना के समय 'आत्मा भिन्न-शरीर भिन्न' के चिंतन में लग जाते। आपकी लेखन कला, अध्ययन के साथ-साथ कवियत्री थी। कोलकाता चातुर्मास में विष्णुदयाल जी गोयल कहते—'आप तो मीरां हैं' जो दुनिया में आता है वह जाता है आना और जाना बड़ी बात नहीं है, महान वह होता है जो पीछे समय प्रबंधन की सौरभ छोड़कर गए हैं।

साध्वीश्री जी की वाणी में जादू था। आपकी क्षमता, समता, सहिष्णुता बेजोड़ थी। २०२१ संवत्सरी के दिन आपने कहा—मैं उपशम की साधना कर रही हूँ। स्वयं तो जागरूक रहे, लेकिन किसी भी परिस्थिति में कोई कुछ भी कहे—"हाँ ठीक है' कोई बात नहीं जैसे होगा वैसे ही कर लेंगे। अंतिम समय में भिक्खू स्याम जप करते-करते प्राण मुद्रा में समाधि मरण को प्राप्त किया। तीन-तीन आचार्यों के शासनकाल में आपने संयम रत्न को दिपाया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की छत्रछाँह में अनुपम ऊर्जा प्राप्त की, पंडित मरण का वरण किया। उपशम की साधिका अपनी लक्षित मंजिल को प्राप्त करें।

इसी भावना के साथ।

✦ *ऐसे कार्यकर्ता भी अपने आपमें साधुवाद के पात्र होते हैं, जो निःस्वार्थ भाव से जनता की नैतिक सेवा करने का प्रयास करते हैं और अपनी शक्ति का नियोजन इस पवित्र सेवा कार्य में करते हैं।*

**– आचार्यश्री महाश्रमण**

## जीवन सफल कियो

● **साध्वी हिमश्री** ●

जीवन सफल कियो
अंतिम अनशन स्वीकार।। आं।।

जन्म हुआ चंदेरी भू पर, शुरू तुलसी से संयम लेकर
चमका बोकड़िया परिवार।

७३ वर्षों का संयम जीवन, जागरूक रहते हर क्षण-क्षण
बहुत किया उपकार।

लंबी-लंबी यात्रा करके, गुरु इंगित आराधन करके,
निर्भीक रहे हर बार।

पापभीरूता, स्वाध्यायशीलता, अंतर्मुखता, जागरूकता
मधुर वचन सहकार।

मंगलीक तेरी थी वरदाई संकट कटते सबके सुखदाई
रहे आजीवन इकसार।

स्वाध्याय ध्यान में समय बिताया, गुरु निष्ठा का पाठ पढ़ाया
शिक्षा मिलती सुखकार।

प्रवचन शैली में आकर्षण, आगम आधारित आख्यापन
किया धर्म प्रचार।

कला कुशलता, सहज मधुरता, वत्सलता का निर्झर बहता
दौड़े आते नर-नार।

संस्कारों से घट को भरते, संघ सेवा के भाव जगाते
है भिक्षु शासन गुलजार।

३८ वर्षों तक सन्निधि तेरी, क्या गुण गरिमा गाऊँ तेरी
भूल न पाऊँ उपकार।

गांधी की गुजरात भूमि पर, स्वर्ग पधारे हैं सतिवर
मुख-मुख जय-जयकार।

गुरु महाश्रमण थे खैवन हारे, अहमदाबाद के श्रावक सारे
सेवा में होशियार।

नतमस्तक हो शीश झुकाती, तेरी स्मृति पल-पल आती
'हिम' का यह उद्गार।

**लय : तोता उड़ जाना---**

## मेरी बगिया तुमने सरसाई

● **साध्वी चैतन्ययशा** ●

स्मृतियाँ तेरी पल-पल आती, गुण गौरव गाथा भूल न पाती।
श्रद्धानत हो शीष झुकाती, मेरी बगिया तुमने सरसाई।।

चंदेरी की पुण्य धरा पर, बोकड़िया कुल में जन्म लिया,
१७ वर्ष की लघुवय में, नश्वरता का बोध किया,
मात-पिता के शुभ संस्कारों से, जीवन बगिया को महकाई।।
मेरी बगिया---

गुरु तुलसी से संयम लेकर, तब जीवन को महकाया,
शासन गौरव साध्वी कस्तूंराजी, से तुमने शुभ संस्कार पाया,
क्या गुण गरिमा गाऊँ तेरी, ये कलियाँ विकसाई।।
मेरी बगिया---

अंतर्मुखता सहज सरलता, जीवन में देखी थी अद्भुत,
ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय जाप से, मन रहता था मजबूत,
सुदूर प्रांतों की यात्रा कर, तुमने गण की शान बढ़ाई।।
मेरी बगिया---

७३ वर्षों का संयम जीवन, तप सौरभ से महका,
मंगलपाठ सुनाते ऐसा, संकट हरता हर नर का,
श्रद्धा है जन-जन के मन में, मंगलीक तेरी थी वरदाई।।
मेरी बगिया---

अंत समय में पंडित मरण कर, तुमने अपना नाम कमाया,
ओम भिक्षु-ओम भिक्षु जप करते-करते, तुमने अंतिम श्वास लिया,
महाश्रमण शासन में तुमने, जीवन नैया पार लगाई।।
मेरी बगिया---

सबसे छोटी साध्वी तेरी, वत्सलता आपने मुझ पर बरसाई,
तेरे सद्संस्कारों से, 'चैतन्य' उऋण नहीं हो पाई,
समय-समय पर सतिवर तेरी, शिक्षा भी वरदाई।।
मेरी बगिया---

## आध्यात्मिक अनुष्ठान एवं फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

**भीलवाड़ा।**

जन्माष्टमी के अवसर पर तेरापंथी सभा, भीलवाड़ा द्वारा तेरापंथ भवन में नागौरी गार्डन में आयंबिल तप का आध्यात्मिक अनुष्ठान रखा गया। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने मंत्रोच्चार द्वारा आध्यात्मिक आयंबिल तप अनुष्ठान का शुभारंभ करते हुए कहा कि रसनेंद्रीय पर विजय प्राप्त करने वाले इस आयंबिल तप का जैन धर्म में विशिष्ट स्थान है।

साध्वीश्री ने तप अनुष्ठान में सहभागी सभी तपस्वियों के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। तेरापंथी सभा मंत्री योगेश चंडालिया ने तपस्वी भाई-बहनों का स्वागत किया। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि आध्यात्मिक अनुष्ठान के संयोजक सभा कोषाध्यक्ष राजेंद्र सामसुखा एवं संगठन मंत्री बाबूलाल पितलिया रहे। अनुष्ठान कार्यक्रम में आभार लक्ष्मीलाल झाबक ने किया।

साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी, साध्वी कुमुदप्रभा जी की प्रेरणा से लगभग ६५ सामूहिक आयंबिल तप हुए। ज्ञानशाला के नन्हे-नन्हे बच्चों के लिए विचित्र फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें प्रथम रायरा सिंघवी, द्वितीय सिद्धार्थ दुगड़, तृतीय मुदित झाबक, किंजल जैन को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कनिका बोहरा, अंश दुगड़, दीक्षिता सेठिया को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला संयोजिका नीतू गोखरू ने किया। प्रतियोगिता के निर्णायक सभा मंत्री योगेश चंडालिया, महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल एवं ज्ञानशाला प्रभारी लक्ष्मीलाल सिरोहिया रहे।

ज्ञानशाला कार्यक्रम में मुख्य प्रशिक्षिका सीमा बड़ोला, सह-संयोजिका शोभना सिरोहिया, सपना बाबेल का सहयोग रहा।

## उवसग्गहरं स्तोत्र अनुष्ठान का आयोजन

**ठाणे।**

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में उवसग्गहरं स्तोत्र अनुष्ठान का आयोजन संपन्न हुआ। प्रभु पार्श्वनाथ स्तुति, उवसग्गहरं स्तोत्र, बीज मंत्र तथा अनेक शक्तिशाली मंत्रों का स्पष्ट उच्चारण साध्वीश्री जी के साथ स्वर में स्वर मिलाकर पूरी परिषद ने सस्वर संगान किया।

ठाणे और आसपास के उपनगरों से ७७ पति-पत्नी के जोड़े और ६६ श्रावक-श्राविका कुल २२३ भाई-बहनों ने अनुष्ठान में भाग लिया। साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि आचार्य भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित यह अमोघ मंत्र आत्मिक उत्थान के साथ ही कई विघ्न-बाधाएँ दूर करता है और मनवांछित फल देता है। मंत्र को सिद्ध करने की विधि भी विस्तार से बताई।

साध्वी श्वेतप्रभा जी ने स्थिरता और उपस्थिति के लिए परिषद की प्रशंसा की। ठाणे तेरापंथी सभाध्यक्ष रमेश सोनी, मंत्री नरेश बाफना, कार्यक्रम संयोजक मंजु एवं महेंद्र कोठारी, सहित सदस्यों एवं अनेक जनों के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा। तेयुप, महिला मंडल और कन्या मंडल का विशेष श्रम रहा। मंत्री नरेश बाफना ने आभार ज्ञापित किया।

### अभिनव सामायिक के विविध आयोजन

# आत्मा को निर्मल करने का उपक्रम है सामायिक

## कोकराझार

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया।

उपासक विजय बरमेचा और रवि छाजेड़ के निर्देशन में आयोजन हुआ। परिषद अध्यक्ष विजय भूरा ने विचार व्यक्त किए।

मंत्री राज कुमार बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए।

## अमराईवाड़ी-ओढ़व

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में किया गया। परिषद अध्यक्ष हेमंत पगारिया ने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी नंदिताश्री जी ने कहा कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्त्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है।

साध्वी नंदिताश्री जी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। आभार ज्ञापन मंत्री हितेश चपलोत ने किया।

## चलथान

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में किया गया। परिषद अध्यक्ष राकेश दक ने भाव व्यक्त किए।

साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने सामायिक के महत्त्व के बारे में बताया। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया।

मंत्री बिपिन पितलिया ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम अभातेयुप से रोनक सरणोत, तेयुप बारडोली से पीयूष बाफना, महावीर दक, तेयुप कामरेज से लोकेश मांडोत, तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप के सदस्यों की उपस्थिति रही।

## आमेट

अभातेयुप निर्देशित तेयुप द्वारा साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। तेयुप सदस्यों ने गीतिका का संगान किया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने सभी श्रावक समाज को एक-एक सामायिक प्रत्याख्यान करवाया। तेयुप अध्यक्ष पवन कच्छारा ने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने सामायिक का महत्त्व बताया। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया।

तेयुप मंत्री विपुल पितलिया ने अपने विचार रखे। सामायिक संयोजक सुदीप छाजेड़ ने आभार व्यक्त किया।

## साहूकारपेट, चेन्नई

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अभातेयुप द्वारा निर्देशित अभिनव सामायिक कार्यक्रम तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ जैन विद्यालय, साहुकारपेट प्रांगण में मनाया गया। तेयुप, चेन्नई से नवीन बोहरा एवं तेयुप साथियों ने गीत के संगान से मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी ने सभी का स्वागत किया तथा अपने विचार प्रस्तुत किए।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने अभिनव सामायिक का अनूठा प्रयोग उपस्थित श्रावक समाज से करवाया एवं कहा कि अध्यात्म का प्रथम सोपान है—सामायिक। सामायिक आराधक सामायिक साधना से छह कार्यों को अभयदान देते हैं।

साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी एवं साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने मनमोहक प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद ने सामायिक गीत का संगान किया। संचालन साध्वी सिद्धियशा जी ने किया। अभिनव सामायिक के कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी, उपाध्यक्ष विशाल सुराणा, सहमंत्री दिलीप गेलड़ा एवं अनेक तेयुप साथी और सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक किशोर मंडल प्रभारी मुकेश आच्छा का श्रम रहा।

## बारडोली

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। पर्युषण पर्व के अंतर्गत कार्यक्रम में परमेष्ठी वंदना, जप, स्वाध्याय, नवकार महामंत्र, ध्यान, त्रिपदीवंदना आदि संपूर्ण प्रक्रिया के अंतर्गत कार्यक्रम संपादित किया गया।

सायंकालीन आयोजित कार्यक्रम में अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता, तेयुप अध्यक्ष साहिल बाफना, मंत्री रौनक सरणोत, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राजेंद्र बाफना, तेमम अध्यक्षा संगीता सरणोत सहित अन्य सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

# पर्वाधिराज मैत्री पर्व संवत्सरी

**मंगलुरु।**

बैंगलुरु से समागत उपासिका बहनों के तत्त्वावधान में पर्युषण पर्व पूरे आध्यात्मिक वातावरण में मनाया गया। उपासिका सरोज आर० बैद, लता बाफना व हेमलता सुराणा द्वारा कालचक्र का वर्णन, भगवान महावीर के पूर्व भव एवं जीवन-चरित्र का वर्णन, अष्टदिवसीय विषय विवेचना, १० अछेरों का वर्णन, १२ व्रत-धारण, १८ पाप-परिहार, मंत्र-साधना, तत्त्वज्ञान, जैन जीवनशैली, चौदह नियम, भिक्षु स्वामी के जीवन से जुड़े अविस्मरणीय प्रसंग इन सभी विषयों का सटीक विश्लेषण किया गया।

इन आठ दिनों में जैन परिवारों में धर्मध्यान का अच्छा माहौल रहा। श्रावक समाज ने अच्छा लाभ प्राप्त किया। निरंतर सुबह से प्रार्थना, प्रवचन, दोपहर में भक्तामर, तत्त्वचर्चा व जैन विद्या, सायंकालीन प्रतिक्रमण और रात्रि में जैन दर्शन पर आधारित विभिन्न विषयों पर अच्छी चर्चा चली।

क्षेत्र में अच्छी संख्या में उपवास, एकासन, पौषध आदि हुए। बेले-तेले की तपस्या, जपानुष्ठान, सामायिक व मौन की पचरंगी भी हुई। गुरु-धारणा एवं १२ व्रत संकल्प करवाए गए। सामूहिक खमतखामणा का आयोजन किया गया, जिसमें उपासिकात्रय का सभा एवं मलनाड समिति ने साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। सभाध्यक्ष सतीश भूरा, मलनाड़ समिति अध्यक्ष तेजकरण सिपानी, तेमम अध्यक्ष शायर बैंगाणी, अलका बैद आदि ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उपासिका बहनों के प्रति मंगलभावना व्यक्त की तथा गोमतीदेवी दुगड़ परिवार का स्थान उपलब्धता हेतु आभार व्यक्त किया। जैन विद्या परीक्षार्थियों एवं तपस्वियों को सम्मानित किया गया।

# पर्युषण महापर्व कार्यक्रम

**भीलवाड़ा।**

तेयुप द्वारा पर्युषण महापर्व के दौरान रात्रिकालीन कार्यक्रम डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में किए गए। जिसके अंतर्गत स्वरों का शानदार शतक, क्विज क्रिकेट सम्राट, कविता का संसार, अभिनव अंत्याक्षरी, बोलने की कला, खजाना खुलेगा उपहार मिलेगा, एक कहानी में भी सुनाओ।

निम्न कार्यक्रमों में सभी संस्थाओं ने महिला मंडल, किशोर मंडल, टीपीएफ एवं सभा के सदस्यों ने अच्छी प्रस्तुति दी। तेयुप के सभी सदस्यों का विशेष सहयोग रहा।

### सामायिक के साथ जप का आयोजन

# आत्मशक्ति संवर्धन सामायिक

**गंगाशहर।**

अभातेयुप के तत्त्वावधान में आयोजित आत्मशक्ति संवर्धन सामायिक के साथ जप अनुष्ठान के कार्यक्रम में तेयुप के द्वारा सामायिक के साथ जप अनुष्ठान किया गया। जिसमें सभी सदस्यों ने बड़े ही तन्मयता से 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का जाप किया। तेयुप अध्यक्ष, मंत्री ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

**अमराईवाड़ी।**

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आत्मशक्ति जागरण एवं आत्मा के आध्यात्मिक विकास हेतु आत्म संवर्द्धन का आयोजन किया गया।

जिसमें सामायिक के साथ 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' मंत्र की साधना सभी युवा एवं किशोर साथियों ने की। जाप की शुरुआत संयोजक पंकज डांगी और प्रतीक चिपड़ ने नवकार महामंत्र से की। अंत में अल्पेश हिरण ने आभार ज्ञापन किया।

**श्रीडूंगरगढ़।**

अभातेयुप द्वारा निर्देशित 'मैं हूँ सामायिक साधक' के अंतर्गत सामायिक के साथ जप अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन तेयुप द्वारा किया गया।

तेयुप मंत्री दीपक सेठिया ने बताया कि मालू भवन में सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी चरितार्थ प्रभा जी की प्रेरणा से तेयुप व तेरापंथ किशोर मंडल के पदाधिकारी एवं सदस्यगण ने 'ॐ भिक्षु - जय भिक्षु' के जप अनुष्ठान से कार्यक्रम संपन्न किया।

**जयपुर।**

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा मैं हूँ सामायिक साधक के अंतर्गत आत्मशक्ति संवर्धन सामायिक के साथ जप अनुष्ठान का कार्यक्रम भिक्षु साधना केंद्र में शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी, अणुविभा जयपुर केंद्र में शासनश्री साध्वी धनश्री जी और तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' का जप किया गया।

कार्यक्रम में तेयुप व किशोर मंडल सदस्यों के साथ श्रावक-श्राविकाओं की सहभागिता रही। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक गौतम बरड़िया, अभिषेक भंसाली व कुलदीप बैद का श्रम उल्लेखनीय रहा।

**पर्वत पाटिया।**

अभातेयुप के तत्त्वावधान में आत्मशक्ति संवर्धन सामायिक के साथ जप अनुष्ठान का कार्यक्रम प्रवक्ता एवं उपासक रतन सियाल एवं उपासक प्रकाश हिरण के निर्देशन में जप अनुष्ठान कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के सदस्य, महिला मंडल, तेयुप के सदस्य, किशोर मंडल के सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज की विशेष उपस्थिति रही तथा सभी ने सामायिक के साथ 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' के जाप किए।

**हैदराबाद।**

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में अभातेयुप के तत्त्वावधान में आत्मशक्ति संवर्धन जप अनुष्ठान का आयोजन तेयुप द्वारा हुआ। अनुष्ठान में सदस्यों ने बड़ी संख्या में 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' का जाप किया। विशेष रूप से अभातेयुप सदस्य अभिनंदन नाहटा, मनीष पटावरी, आशीष दक, पूर्व अध्यक्ष श्रवण कोठारी, अध्यक्ष विरेंद्र घोषल, उपाध्यक्ष विनोद दुगड़, मंत्री नीरज सुराणा, सहमंत्री नवीन लुणिया, संगठन मंत्री निर्मल दुगड़ व अन्य सदस्य उपस्थित थे। मंत्री नीरज सुराणा ने आभार ज्ञापित किया।

**साउथ हावड़ा।**

अभातेयुप द्वारा निर्देशित आयाम 'मैं हूँ सामायिक साधक' के अंतर्गत सामायिक के साथ जप अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया। १४ सदस्यों ने बड़ी तन्मयता से 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' का जाप किया। जप अनुष्ठान में अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा, मंत्री गगनदीप बैद सहित परिषद के सदस्यों की उपस्थिति रही। मंत्री गगनदीप बैद ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

**रायपुर।**

अभातेयुप निर्देशानुसार तेयुप द्वारा आत्मशक्ति संवर्धन जप अनुष्ठान समणी निर्देशिका कमल प्रज्ञा जी एवं सहवर्तनी समणीवृंद के सान्निध्य में किया गया। इस जप अनुष्ठान में 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' के जप के साथ सामायिक भी की गई।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 - 16 अक्टूबर, 2022



✦ *अणुव्रत की साधना करने वाला व्यक्ति अहिंसा और संयम को आंशिक रूप में साध सकता है। उसकी वह साधना पर्यावरण की दृष्टि से भी उपयोगी बन जाती है।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

## चेन्नई

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा ओपन टॉक विद साध्वीश्री कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का सान्निध्य रहा। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के साथ हुई।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने प्रश्नों के रोचक व सटीक जवाब दिए। कार्यक्रम के संयोजक स्पेशल इन्वाइटी तमन शियाल, ऋषभ सुखलेचा एवं सह-संयोजक जयेश शियाल ने अपना दायित्व निभाया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रभारी मुकेश आच्छा, सहप्रभारी आदित्य दुगड़, संयोजक संजय राय सोनी, सह-संयोजक संयम संकलेचा का सहयोग रहा। कार्यक्रम में पदाधिकारीगण के साथ अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन तेयुप कार्यसमिति सदस्य हिमांशु डूंगरवाल ने किया।

## पूर्वांचल-कोलकाता

डॉ० धीरज मरोठी के निर्देशन में अस्थि-चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। डॉ० धीरज मरोठी का उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया गया।

तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता के मंत्री व एटीडीसी के पूर्व सह-संयोजक हेमंत बैद ने इस शिविर में पूर्ण सहभागिता दर्ज कराई।

इसी क्रम में तेयुप पूर्वांचल एवं किशोर मंडल ने मिलकर निःशुल्क बूस्टर डोज वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर लेक टाउन में किया। समाज के कई वर्ग इस शिविर से लाभान्वित हुए।

तेयुप, पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव खटेड़ अपनी पूरी टीम के साथ खुशियान फाउंडेशन के सहयोग से लगाया गया। इस शिविर के प्रायोजक राजेश कायान थे।

शिविर की आयोजना में विशेष श्रम रहा एटीडीसी के संयोजक व कार्यसमिति सदस्य रोहित धाड़ेवा, एटीडीसी के सह-संयोजक व कार्यसमिति सदस्य नीरज बैंगानी एवं सहमंत्री-प्रथम यश दुगड़ के प्रयास से शिविर सफल रहा।

## कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में 'मोक्ष की सीढ़ी चंडकौशिक का डंक' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि मोक्ष पहुँचने के लिए जीवन में साधना की अपेक्षा होती है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी साधु की तरह जीवन जी सकते हैं। जहाँ जीवन सम्यक् होता है वहाँ अपराध अपने आप कम हो जाते हैं। यही धर्म का सार होता है। साधना करके कितने ही जीवों ने मुक्ति को प्राप्त किया। मोक्ष जाने के लिए पुरुषार्थ एवं भाग्य दोनों अपेक्षित है।

मुनि कुमुद कुमार जी के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम पाँच राउंड में चला। जिसमें भगवान ऋषभ, भगवान महावीर स्वामी, जैन धर्म एवं सामान्य ज्ञान का उपक्रम चला। सामायिक, स्वाध्याय, वाणी संयम, जप, ध्यान, खाद्य संयम पर अपने विचारों की प्रस्तुति देने के साथ गीत का संगान किया। सिद्ध ग्रुप, उपाध्याय ग्रुप एवं मुनि ग्रुप विजेता रहे। प्रतिभागियों से विविध रूप से जानकारी प्राप्त की गई। आचार्य ग्रुप के मोक्ष पहुँचने में बाधक बना चंडकौशिक जिसे माला के मोती एवं गणधरों ने सहारा बनकर बचा लिया।

मुनि कुमुद कुमार जी एवं गौरव विमल जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया। तेयुप उपाध्यक्ष दीपक जैन ने कार्यक्रम की उपयोगिता को उजागर किया। स्कोर बोर्ड की भूमिका का निर्वाहन करते हुए ऋषभ जैन ने सभी का मूल्यांकन किया। समय प्रबंधन की भूमिका दीपक जैन ने पूर्ण की। आभार ज्ञापन मयंक जैन ने किया। कन्या मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

## मैसूर

तेयुप के तत्त्वावधान में लगभग १७५ (युवक, कन्या, किशोर, सभा, महिला मंडल) सदस्यों ने Celebration Marothon (Half & 10 k) में भाग लिया। सभी का उत्साह देखते ही बन रहा था। साथ ही तेयुप द्वारा एमबीडीडी को भी प्रमोट किया गया। एमबीडीडी के बैनर और स्टैंड भी लगाया गया तथा स्टेज से एमबीडीडी की जानकारी दी गई

सभी को रक्तदान करने के लिए कहा गया। लगभग २५००-३००० तक की पब्लिक में एमबीडीडी का संदेश पहुँचा।

## बैंगलोर

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि जीवन स्वर्ग है और उसे निखारना है तो उसे समय की आँच पर तपना पड़ेगा। व्यक्ति को यदि सही तरीके से जीना है तो उसे समय प्रबंधन अपने जीवन में लागू करना होगा। समय का सार्थक उपयोग करने वाला कभी असफल नहीं होता, बल्कि सफलता के एवरेस्ट पर पहुँचकर विजय ध्वज लहराकर एक नया इतिहास का सृजन करता है। हम वक्त की कद्र करें तो वक्त हमारी करेगा। आप समय का मूल्यांकन करोगे तो समय भी हमारा मूल्यांकन करेगा। सफल जीवन की आधारशिला है समय प्रबंधन।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि समय प्रबंधन के सूत्र को समझने के बाद सच्चे अर्थों में समय का सही प्रबंधन तब होता है, जब आपको समय का प्रबंधन करना ही न पड़े। वह स्वयं होता चला जाता है।

अध्यक्ष प्रदीप चौपड़ा, उपाध्यक्ष सुधीर पोखरना, विक्रम सेठिया, मंत्री विकास बाबेल, सहमंत्री विनोद कोठारी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं अन्य जन की उपस्थित थे।

## अहमदाबाद

मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य मंथन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुनि मुकुल कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की। तत्पश्चात गायक दीपक संचेती एवं धीरज पोखरना ने मंगलाचरण किया। तेयुप के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने मंथन में उपस्थित सभी का स्वागत किया।

अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया ने सभी का स्वगात करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

मुनि मुकुल कुमार जी ने तेयुप क्या है? क्यों हमें तेयुप से जुड़ना चाहिए? तेयुप के संगठन को मजबूत बनाने के लिए क्या-क्या करना चाहिए? उस पर प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

पूर्व अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा सहित अनेक पदाधिकारीगण ने अपने विचार रखे।

अंत में संगठन मंत्री दीपक संचेती द्वारा आभार व्यक्त किया गया। मंथन वर्कशॉप कार्यशाला का संचालन तेयुप मंत्री दिलीप भंसाली ने किया।

## अमराईवाड़ी-ओढ़व

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा 'पब्लिक स्पीकिंग' कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के नवकार महामंत्र से हुई। साध्वी संवेगश्री जी ने गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में विशेष २३ प्रतिभागियों ने अलग-अलग टॉपिक पर अपनी प्रस्तुतियाँ दी।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कार्यक्रम की सराहना की। साध्वी तरुणप्रभा जी ने सम्यक् दर्शन कार्यशाला के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया, तेयुप परामर्शक दिनेश चंडालिया ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुकेश सिंघवी ने किया। आभार ज्ञापन प्रोविजनल ट्रेनर आकाश शाह ने किया। सभी सत्र में प्रायोजक दिनेश सिंघवी, कैलाश बाफना, विपुल मांडोत का विशेष सहयोग रहा।

# भक्तामर का सामूहिक सजोड़े अनुष्ठान

**उदासर।**

शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में सजोड़े भक्तामर अनुष्ठान का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में ४४ जोड़े उपस्थित थे एवं अन्य अनेकों भाई-बहनों ने अनुष्ठान में भाग लिया। कार्यक्रम रोचक एवं गरिमापूर्ण रहा। साध्वी कांतप्रभा जी ने भक्तामर का महत्त्व बताकर पूरा उच्चारण सहित भक्तामर पाठ किया।

साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि भक्तामर का एक-एक श्लोक बहुत ही शक्तिशाली है। कई श्लोकों से शारीरिक एवं मानसिक व्याधि दूर हो जाती है। प्रतिदिन नियमित पाठ करने से अनेकों लोगों को रोगमुक्ति में सहयोग मिला है। साध्वी शीतलयशा जी एवं साध्वी रोहितप्रभा जी ने दाम्पत्य जीवन-सुखी जीवन बने, इसके उपाय बताए। सभा के अध्यक्ष हनुमानमल महनोत ने आगंतुक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति की सराहना की एवं साध्वीश्री से निवेदन किया कि ऐसा कार्यक्रम एक बार फिर कराया जाए।

साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में प्रतिदिन अनेक कार्यक्रम एवं तपस्याएँ हुई, तप अनुमोदना करके साध्वीश्री जी ने तपस्वी का मनोबल बढ़ाया एवं अन्य लोगों को तपस्या की प्रेरणा दी।

# नई पीढ़ी में संस्कारों का निर्माण आवश्यक है

**सवाई माधोपुर।**

हर धर्म के अपने संस्कार होते हैं, जो उसके अनुयायियों में नैतिकता व शक्ति का संचरण करते हैं। जैन एक पूर्ण सात्त्विक, अहिंसक व समन्वयवादी धर्म है। उससे जुड़े संस्कारों को जीवन व्यवहार में अपनाना समायोचित व प्रासंगिक है। उक्त विचार मुनि सुमति कुमार जी ने आदर्शनगर स्थित अणुव्रत भवन में जैन संस्कार विधि कार्यशाला में व्यक्त किए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व वक्ता श्रीगंगानगर से समागत जैन संस्कारक विमल कोटेचा ने जैन संस्कार विधि की उपादेयता बतलाते हुए दीपावली पूजन की दोषरहित आध्यात्मिक पूजा पद्धति की जानकारी दी। संस्कारक सौरभ जैन, सभा मंत्री नरेंद्र जैन व तेयुप पदाधिकारी तरुण जैन ने पूजा पद्धति में भाग लिया।

इससे पूर्व मुनि देवार्यकुमार जी ने जैन परंपरा के विभिन्न संस्कारों की जानकारी दी व उनको आदर्श रूप में जीवन का अंग बनाने की प्रेरणा दी।

जयपुर से समागत इंद्र बहन ने मुनिवृंद की अभ्यर्थना करते हुए गीतिका की प्रस्तुति दी। सभा की ओर से मंत्री नरेंद्र जैन ने आगंतुक अतिथियों का आभार ज्ञापित किया।

# आत्मविद्या का ज्ञान होता-तत्त्व ज्ञान से

**कांटाबाजी।**

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में एवं संस्था शिरोमणि महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया के मुख्य आतिथ्य में विज्ञ उपाधि प्राप्त सम्मान समारोह आयोजित हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि जीवन में ज्ञान का विकास बहुत जरूरी है। जितना-जितना हम अपनी जिंदगी में ज्ञान को आगे बढ़ाते जाएँगे उतना-उतना हम विकास में आगे बढ़ते जाएँगे।

ज्ञानी व्यक्ति जीवन का यथार्थ समझ लेता है। तत्त्व को समझने वाला व्यक्ति आए हुए दुःख को भोगता नहीं है, जानता जरूर है, लेकिन कभी दुखी नहीं होता है। तत्त्वज्ञान हमारे जीवन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जैन दर्शन अनादिकाल से चला आ रहा है। जैन धर्म के सिद्धांत वैज्ञानिक हैं। श्रावक को नवतत्त्व, बारह व्रत, छः जीवनिकाय का ज्ञान होना आवश्यक है। आधे-अधूरे ज्ञान से व्यक्ति स्वयं भटक जाता है एवं औरों को भी भटका देता है। धर्म को यथार्थ रूप से जानने से ही जीवन में धर्म का वास्तविक अवतरण होता है।

संस्था शिरोमणि महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी के साहित्य ने उच्च शिक्षा प्राप्त, उच्च पद प्राप्त व्यक्ति के दृष्टिकोण को उर्वर बनाया है। जैन दर्शन ने जनमानस को नया चिंतन दिया है। श्रावक संदेशिका का प्रत्येक श्रावक पठन-पाठन अवश्य करें। श्रावक चिंतन करें कि क्या केवल धनार्जन ही करना है या आध्यात्मिकता का भी विकास करना है।

मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि विज्ञ उपाधि धारक बॉबी जैन, सपना, युवराज जैन, ममता बनमाली एवं पूजा सुनील जैन का महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया एवं तेरापंथ सभा अध्यक्ष युवराज जैन ने सम्मानित किया। प्रांतीय सभा की ओर से अध्यक्ष मुकेश जैन ने सम्मान किया। तेरापंथ सभा मंत्री सुमित जैन, तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन, तेमम से ममता जैन ने महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन अजय जैन ने किया।

# अभय से अहिंसा और अहिंसा से अभय पुष्ट होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २ अक्टूबर, २०२२**

आत्मरक्षा का मार्ग प्रशस्त करने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र आगम की व्याख्या करते हुए फरमाया कि बताया गया है कि एवम्भूत एक नय का प्रकार भी है। जब कोई भिक्षा में लगा हुआ हो तो वह भिक्षु है। बाकी समय स्वाध्याय नहीं करे तो वह भिक्षु नहीं। शिक्षक जिस समय पढ़ा रहा है, तब तो शिक्षक है, बाकी समय में वह शिक्षक नहीं है। जब उस प्रवृत्ति में कोई लगा हुआ हो तो वह शब्द उपयोग करना है।

यहाँ एवम्भूत शब्द वेदना के संदर्भ में है। दो प्रकार की वेदना होती है—एवम्भूत वेदना और अनेवमभूत वेदना। प्राण, भूत, जीव और सत्व ये चार शब्द एकार्यक भी हो सकते हैं, पर चारों में अंतर भी किया गया है। चारों की स्थिति अलग-अलग है। दो, तीन, चार इंद्रिय वाले प्राणी प्राण कहलाते हैं। वनस्पतिकाय भूत, पंचेंद्रिय प्राणी जीव एवं पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजसकाय और वायुकाय—ये चारों सत्व कहलाते हैं। ये चारों प्राणी के द्योतक भी बन सकते हैं।

एवम्भूत वेदना का अर्थ है कि जिस प्रकार से कर्मों का बंध हुआ है, उसी के अनुसार बाद में फल भोगना। यह अन्य युथिकों का सिद्धांत है। पर यह सिद्धांत भगवान महावीर की वाणी के अनुसार यह बात जो कहते हैं, वे मिथ्या संभाषण करते हैं। इन चार प्रकारों में कुछ तो एवम्भूत वेदना का वेदन करते हैं, कुछ अनेवमभूत वेदना का वेदन करते हैं। बंधन में परिवर्तन भी हो सकता है। कर्मवाद के अनुसार कर्मों का वेदन दोनों प्रकार से हो सकता है। कर्म का संक्रमण भी हो सकता है। कर्म की दस अवस्थाएँ बताई गई हैं।

वैसे कर्मवाद का मूल सिद्धांत यही है—जैसी करनी, वैसी भरनी, सुख-दुःख वैसा मिलेगा। सभी दर्शनों में कहीं-कहीं समानताएँ हैं, तो कहीं उनमें असमानताएँ भी मिलती हैं। संग्रहनय की दृष्टि से चलें तो अभेद और व्यवहारनय में चलें तो भेद। भेद-अभेद को जानना अच्छा हो सकता है। शास्त्रों से अनेक जानकारियाँ मिल सकती हैं। ज्ञान अच्छा हो, प्रस्तुति अच्छी हो और प्रश्न का उत्तर उचित रूप से दे सकें, वैसा विकास हो। कर्मवाद में क्षयोपशम अच्छा हो।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का अंतिम सातवाँ दिन—अहिंसा दिवस जो महात्मा गांधी से भी जुड़ा है। परमपावन ने फरमाया कि अहिंसा एक शक्ति है कि आदमी को अभय बना सकती हैं। अभय से अहिंसा और अहिंसा से अभय पुष्ट होता है। अहिंसा तो माता है, सबका कल्याण करने वाली है। 'जय हे, जय हे जीवन दाता' गीत का सुमधुर संगान किया। हम जीवन में अहिंसा को आत्मसात रखें। अणुव्रत का कार्य आगे से आगे बढ़ता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर नवरात्रा में शक्ति की आराधना करवा रहे हैं। आत्मा में अनंत शक्ति है। जीवन की दो अवस्थाएँ हैं—सुप्त और जागृत। हमें अपनी शक्तियों का जागरण करना है। शक्ति जागरण का स्रोत है—अभय की साधना। ममत्व का बंधन बहुत बड़ा भय है, वह हमें कमजोर बनाता है। अभय की साधना के लिए हमारा संकल्प बल मजबूत हो। साथ में अनुप्रेक्षा, ध्यान साधना, मंत्र का जप भी हो।

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार जी ने अणुव्रत की प्रगति के विषय में अपनी अभिव्यक्ति दी।

अणुव्रत समिति छापर से प्रदीप सुराणा, व्यवस्था समिति के अध्यक्ष माणकचंद नाहटा, अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अविनाश नाहर ने अपने विचार प्रस्तुत किए। स्कूली बच्चों ने गांधीजी के जीवन पर झाँकी प्रस्तुत की। अणुव्रत समिति द्वारा ३००० नशामुक्ति संकल्प-पत्र पूज्यप्रवर को समर्पित किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# सम्यक् पुरुषार्थ से बनाएँ अपने जीवन को सार्थक : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, ३ अक्टूबर, २०२२**

परमपूज्य ज्योतिपुंज आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि भंते! जीव अल्प आयुष्य कर्म का बंध क्यों होता है, क्या कारण है? उत्तर दिया गया कि अल्प आयुष्य बंध के तीन कारण हैं—प्राणातिपात कर, झूठ बोलकर व साधुओं को अप्रासूक अनेषणीय अशुद्ध दान देना।

दूसरा प्रश्न किया गया कि जीव दीर्घ आयुष्य कर्म का बंध क्यों करता है। उत्तर दिया गया कि उसके तीन कारण हैं—प्राणातिपात न करना, झूठ न बोलना एवं साधु को प्रासूक एषणीय दान देना। तीसरा प्रश्न है कि दीर्घ अशुभ आयुष्य का बंध क्यों करता है? उत्तर दिया गया—हिंसा कर, झूठ बोलकर व श्रमण-माहन को निंदा अवहेलना कर उनको दान देना। चौथा प्रश्न पूछा गया कि शुभ दीर्घ आयुष्य का बंध कैसे हो सकता है। तो बताया गया गौतम! प्राणों का अतिपात न कर, झूठ न बोले व साधुओं को जो वंदन-नमस्कार करता है। उनकी पर्युपासना कर साधु को मनोज्ञ कीर्तिकर दान देने से।

आयुष्य कितना है, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। जीवन कैसे जीया यह महत्त्वपूर्ण है। आयुष्य दीर्घ हो या अल्प पर सुखमय हो। हमारे धर्मसंघ में देखें तो पूज्य आचार्यश्री मघवागणी व पूज्य आचार्यश्री कालूगणी का आयुष्य तो दीर्घ नहीं था, पर उन्होंने अपने ढंग से अच्छा कार्य किया था। जीवन हमें कितना मिलेगा ये हमारे हाथ की बात नहीं है। पर जीवन जितना मिला है, पुरुषार्थ अच्छा करें। जीवन अच्छा जीना चाहिए।

अच्छा जीवन जीने के लिए तीन बातें जरूरी हैं कि प्राणियों की हिंसा नहीं करें, अहिंसापूर्ण जीवन हो। ईमानदारी का जीवन जीएँ। झूठ-कपट व धोखाधड़ी से बचें। साधु घर पर पधारे तो ससम्मान वंदना कर विनयपूर्वक प्रासूक एषणीय वस्तु का दान देना चाहिए। गृहस्थ इन बातों पर विशेष ध्यान दें। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि बाह्य काँटे का मुख्य काम है, पीड़ा देना। आभ्यंतर काँटे से आत्मा मलीन हो सकती है। ठाणं आगम में तीन प्रकार के शल्य बताए गए हैं—माया शल्य, निदान शल्य व मिथ्या दर्शन शल्य। मिथ्यात्व से आत्मा का पतन हो सकता है। मिथ्यात्व का संबंध मोहनीय कर्म से है। जो तत्त्व नहीं है, उसे तत्त्व समझ लेना भी मिथ्यात्व है।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में आज से त्रिदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन शुरू हुआ है। छापर महिला मंडल मंत्री अलका बैद ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। महिला मंडल द्वारा गीत की भी प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# भारत के ७१वें और पंजाब के प्रथम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का भव्य शुभारंभ

**सुनाम।**

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष-प्रथम रमेश डागा की अध्यक्षता में एटीडीसी का लोकार्पण तेरापंथ भवन इंदिरा बस्ती में किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र एवं विजय गीत से किया गया। मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि यह लौकिक कार्य है। जैन-अजैन सबके लिए उपयोगी कार्य है। तेयुप के अथक प्रयास और तेरापंथ सभा, महिला मंडल के सहयोग से यह कार्य होने जा रहा है, इस कार्य के लिए डूंगरगढ़ निवासी, कोलकाता प्रवासी भीखमचंद पुगलिया का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। स्थानीय लोगों ने भी अपना सहयोग कर इसको सुचारु रूप से तैयार किया है, इस कार्यक्रम में अभातेयुप के ३ पदाधिकारी एवं ६ सदस्य सहभागी बने। रमेश डागा, पवन मांडोत, भरत मरलेचा, पवन नवलखा, देवेंद्र डागा, अनुज जैन, महावीर सेठिया, अरुण जैन, अरिहंत जैन सभी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में पंजाब प्रांतीय सभा के अध्यक्ष केवल कृष्ण जैन, भरत मरलेचा, पवन मांडोत, रमेश डागा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अरिहंत जैन ने किया एवं आभार ज्ञापन सुमित जैन ने किया। कार्यक्रम में चतुर्भुजी जैन हुकूमत जैन रामस्वरूप जैन, राजन जैन, सुरेश जैन, राम जैन, गोरा लाल जैन, प्रेम जैन, महेंद्र जैन, सुरेंद्र जैन, रविंद्र जैन, सुरेश जैन, देवेंद्र जैन, दिनेश जैन, डॉ० नरेश, डॉ० मंजु सहित अनेक भाई-बहनों ने भाग लिया।

मुनिश्री ने कार्यक्रम से पूर्व नवरात्रि का अनुष्ठान करवाया एवं मुनि नमि कुमार जी ने २८ दिन का प्रत्याख्यान किया। मुनि नमि कुमार जी ने कुछ दिन पूर्व ३४ दिन की तपस्या सानंद संपन्न की। मुनिश्री की तपस्या सभी के लिए अनुमोदनीय एवं प्रशंसनीय है। मुनिश्री ने अग्रसेन जयंती एवं अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के प्रारंभ में अपने उद्गार व्यक्त किए। एटीडीसी का लोकार्पण जैन संस्कार विधि से किया गया।

अरुण जैन के मार्गदर्शन में जैन संस्कार विधि कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें १४ भाई-बहनों ने भाग लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में गौरव जैन, संदीप जैन, हितेश जैन, विनय जैन, अंकित जैन, रूपेश जैन, लकी जैन, रवि जैन आदि का विशेष सहयोग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 - 16 अक्टूबर, 2022



✦ *नाम, यश, पद, प्रतिष्ठा, पैसा–यह सब नैतिक मूल्यों के आगे गौण रहें तो राजनीति की प्रतिष्ठा और सार्थकता पर प्रश्नचिह्न नहीं लग सकेगा।*

**–आचार्यश्री महाश्रमण**

# अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान मानव जाति के लिए कल्याणकारी है : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, ३० सितंबर, २०२२**

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र आगम की विवेचना करते हुए फरमाया कि केवलज्ञानी साधु में अनंत ज्ञान, अनंत शक्ति और सर्वज्ञाता है। शक्ति की अभिव्यक्ति का माध्यम शरीर है। शरीर से वीर्य उत्पन्न होता है। वीर्य से योग, मन, वचन, काया की प्रवृत्ति होती है। चंचलता की स्थिति केवलज्ञानी में भी होती है। जिन आकाश प्रदेशों पर हाथ रखा था, पर चंचलता के कारण वापस वहीं हाथ रखना संभव नहीं है। यह पौद्गलिक चंचलता है।

चंचलता मन, वचन और काया की हो सकती है। प्रेक्षाध्यान में चंचलता निरोध की बात बताई जाती है। प्रेक्षाध्यान में कायोत्सर्ग भी एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। ध्यान में स्थिरता और शिथिलता रखना आवश्यक है। मुनि नथमलजी टमकोर (आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी) ने जयपुर में गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान का विधिवत शुभारंभ किया था प्रेक्षाध्यान के प्रारंभ की स्मृतियाँ पूज्यप्रवर ने विस्तार से फरमायी।

ध्यान के प्रयोग के लिए शरीर की स्थिरता और शरीर की शिथिलता ये दोनों पृष्ठभूमि होती हैं। जहाँ केवलज्ञानी के पास भी अपने शरीर की चंचलता को नियंत्रित करने की सक्षमता नहीं है, वहीं वर्तमान में आम आदमी प्रेक्षाध्यान के द्वारा शरीर की चंचलता को कम करने का प्रयास कर रहा है। अगर शरीर को स्थिर और शिथिल कर दें तो ध्यान अच्छा हो सकता है। प्रेक्षाध्यान का कार्य मुख्यतया जैन विश्व भारती देखती है। इसके अंतर्गत प्रेक्षा फाउंडेशन इसके कार्य को संभालती है।

तेरापंथ के कुछ आयाम केवल तेरापंथ धर्मसंघ के लिए नहीं, बल्कि जन-जन के कल्याण के लिए हैं। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान प्रत्येक मानव जाति के लिए हैं।

प्रेक्षाध्यान तो मानों लोककल्याणकारी हैं। इससे जुड़े लोग जागरूकता के साथ इस कार्य में लगे रहें। पहले ज्यादा तकनीक का भी विकास हुआ है। इसे उपयोग में लाया जाए और प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कराया जाए तो अच्छा हो सकता है। आचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान दिवस के संदर्भ में अपनी सन्मति शिक्षण कक्षा के विद्यार्थी मुनियों को अपने सामने पंक्तिबद्ध बैठने का आदेश देते हुए कुछ ध्यान के प्रयोग कराए तो उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ ने भी इन ध्यान के प्रयोगों को किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने भी प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में अपना उद्बोधन दिया। प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कुमार श्रमण जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने प्रवचन से पहले आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत पाँचवें दिन को नशामुक्ति दिवस के संदर्भ में आचार्यश्री ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि हमने अहिंसा यात्रा के दौरान सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के भी प्रचार-प्रसार पर बल दिया था। आज भी लोगों को यदा-कदा नशामुक्ति का संकल्प भी कराया जाता है। आदमी को अपने जीवन में नशे से बचते हुए संयमपूर्ण जीवनशैली को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। राजनैतिक पार्टियों को भी चुनाव आदि में शराब बाँटने और पिलाने से बचना चाहिए तथा लोगों को भी ऐसी चीजों को ग्रहण करने से बचने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान ये ऐसे ही दो उपक्रम हैं, जो व्यक्ति के जीवन को सुरम्य बनाते हैं। प्रेक्षाध्यान से हम अपने भावों पर कंट्रोल कर सकते हैं। अणुव्रत के माध्यम से हमारा आचरण सुंदर बन सकता है। नशामुक्त जीवन हो सकता है।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी की स्मृति सभा

कार्यक्रम में साध्वी रतनश्री जी की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। इसमें आचार्यश्री ने उनकी संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करते हुए चार लोगस्स के ध्यान की प्रेरणा प्रदान की तो आचार्यश्री के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने भी उनकी आत्मा के उत्तरोत्तर गति के लिए चार लोगस्स का ध्यान किया। मुख्यमुनि महावीर कुमार जी तथा साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने उनके संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

सुजानगढ़ नगर परिषद की नेता प्रतिपक्ष जयश्री दाधीच ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

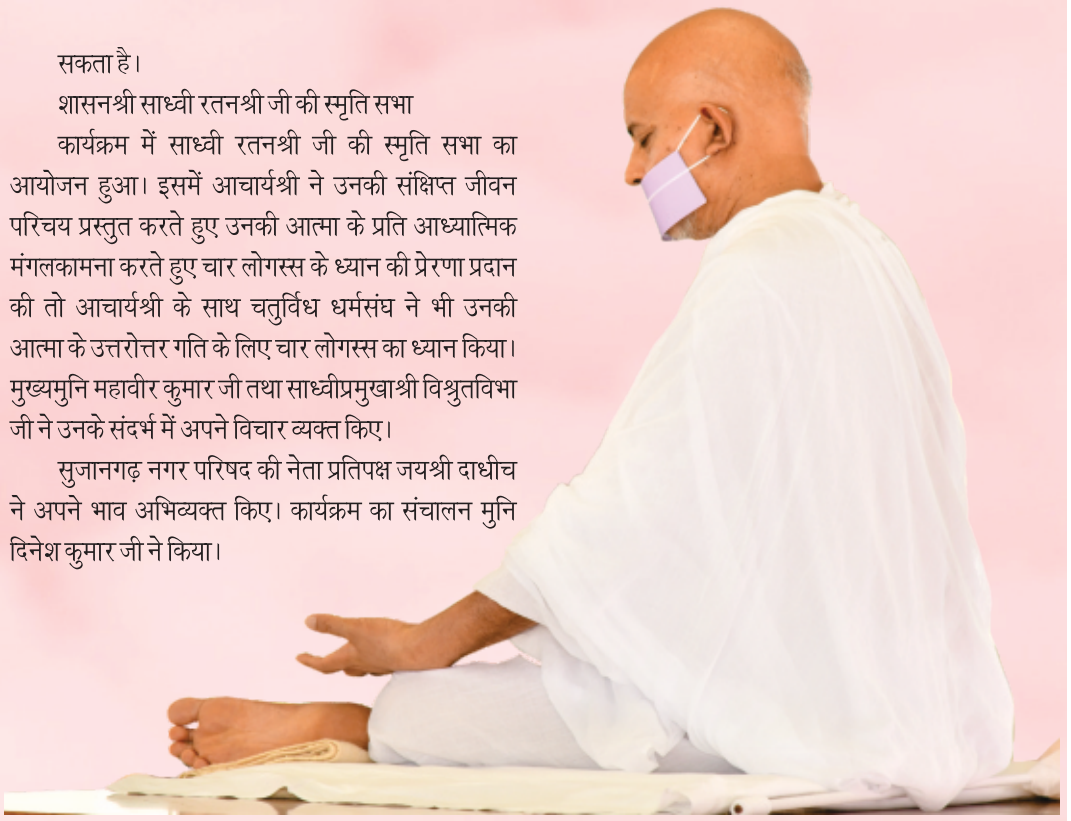

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी जैन विश्व भारती के नव निर्वाचित अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़ को मंगलपाठ सुनाते हुए

# शासनश्री साध्वी रतनश्री जी 'लाडनूं' का देवलोकगमन

**अहमदाबाद।**

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी का जन्म तेरापंथ की राजधानी लाडनूं की पावन धरा पर विक्रम संवत् १९९० फाल्गुन शुक्ला पंचमी को सुप्रसिद्ध बोकड़िया परिवार में हुआ। आपके पिता स्वर्गीय मोतीलाल, मातुश्री स्वर्गीय सीरूबाई बोकड़िया थे। आप सात भाई-बहनों में सबसे छोटी लाड़ली पुत्री थी। बचपन में आपका जीवन सहज, सरल एवं वैराग्य से परिपूर्ण था। परिवार में मृत्यु की जीवंत घटना को देखकर आपके मन में वैराग्य के भाव प्रस्फूटित हुए।

**दीक्षा :** विक्रम संवत् २००७ पंजाब के प्रमुख क्षेत्र संगरूर में युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के करकमलों में दीक्षा ग्रहण कर बालिका रतन साध्वी रतनश्री बन गई। दीक्षा के समय (बाल दीक्षा) का घोर विरोध हुआ। उस समय आपका बुलंद आवाज में भाषण सुन विरोध भी शांत हो गया। दीक्षा लेने के बाद दो वर्ष आप राज में रहे। उसके बाद आपको संसारपक्षीय मामोसा की लड़की शासन गौरव साध्वी किस्तूरांजी (लाडनूं) के साथ दिया गया। २५ वर्ष तक आप उनके साथ रहकर अनेक प्रांतों–कोलकाता, भागलपुर, विराटनगर, काठमांडो, सिक्किम, भूटान, दार्जिलिंग, गंगटोक, तमिलनाडू, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, पांडिचेरी आदि की यात्रा की।

**अग्रगामी :** गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने विक्रम संवत् २०३६ में अनेक विशेषताओं का अंकन करते हुए संगरूर में आपको अग्रगामी बनाया गया। अग्रगामी बनाकर दक्षिण भारत की दूसरी बार यात्रा की। तीन सेवा केंद्रों की चाकरी की।

**कंठस्थ :** दसवैआलियं, उत्तराध्ययन, आचारांग, षट्दर्शन समुच्चय, नाममाला, शांत सुधारस, रघुवंश अभिज्ञान शाकुंतलम् आदि-आदि विशेष आपने एक साल में २२ बार उत्तराध्ययन सूत्र का स्वाध्याय किया।

**विशेषता :** आप संघ-संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित थीं। सहवर्तिनी साध्वियों के संस्कार निर्माण के प्रति भी आप पूरे जागरूक थे। कई बार फरमाते मर्यादा, आचार, गुरु आज्ञा के प्रति कभी भी मन में कोई अन्यथा भाव न आए तथा हमारा लक्ष्य संघ प्रभावना का रहे।

**भाषा :** हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती भाषाओं पर पूरा अधिकार था। अनेक वर्षों तक कच्छ भुज में गुजराती भाषाओं पर आपका प्रवचन होता था। अंग्रेजी भाषा का भी आपने अध्ययन किया।

**विशेष रुचि :** ध्यान, प्राणायाम, आगम स्वाध्याय, जयाचार्य कृत चौबीसी, आराधना, नमस्कार महामंत्र का विशेष अनुष्ठान, जप और तप का विशेष योग रहता था।

**शासनश्री अलंकरण :** सन् २०१६ में महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा सिलीगुड़ी मर्यादा महोत्सव पर।

**संथारा :** पूज्यप्रवर की आज्ञा अनुसार शासनश्री साध्वी रमावती जी ने अहमदाबाद श्रावक समाज के समक्ष शासनश्री साध्वी रतनश्री जी को ८९ वर्ष की उम्र में २४ सितंबर, २०२२ को रात्रि ८ बजकर ५ मिनट पर सागारी संथारा तथा ९:१५ पर चौविहार संथारा का प्रत्याख्यान करवाया तथा ९:२५ पर देवलोकगमन हो गया।

आपके संसारपक्षीय मोसेरे भाई महाराज मुनि गुलाबचंदजी स्वामी निर्मोही, संसारपक्षीय भाणजी साध्वी मंगलप्रभा जी तथा संसारपक्षीय दोहिती साध्वी सरदप्रभाजी, साध्वी स्वस्तिकप्रभा जी, साध्वी मलयविभा जी आदि संघ में दीक्षित हैं।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**